कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

ISSN:2583-4991

● भोपाल मंगलवार 11 से 17 अगस्त 2026 ● वर्ष-27 ● अंक-12 ● पृष्ठ-16 ● मूल्य-13 रु. ● RNI No. MPHIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र.एम.पी./भोपाल/625/2024-26

हायब्रिड मोड में उलझा किसान कल्याण विभाग

त्वरित टिप्पणी

अमरेन्द्र मिश्रा

मध्य प्रदेश किसान कल्याण विभाग अपने काले कारनामों के कारण हमेशा सुर्खियों में रहता है। इस साल खरीफ सीजन की शुरुआत से ही उर्वरक वितरण की नई व्यवस्था ई-विकास प्रणाली शुरू की गई जो शैशवावस्था में ही विवादों में रहीं। आनन-फानन में ई-टोकन प्रणाली का प्रस्तुतीकरण प्रधानमंत्री कार्यालय में प्रदेश के तत्कालीन मुख्य सचिव द्वारा दिया गया। उर्वरक वितरण की इस नवीन व्यवस्था को लेकर दावा किया गया कि शीध्र ही इसे पूरे देश में लागू किया जायेगा। प्रदेश के अति उत्साही सचिव कृषि ने विभिन्न उर्वरक प्रदायकों के साथ कई बार बैठकें करके समय-समय पर इसमें परिवर्तन भी किया लेकिन सफल नहीं हुये। जिस ई-विकास प्रणाली की सफलता को लेकर बड़े बड़े सब्ज बाग दिखाये जा रहे थे पल भर में रद्द करना पड़ा।

किसानों के आंदोलन से दबाव में आयी सरकार ने ई-टोकन को स्थगित तो कर दिया लेकिन उर्वरक वितरण सरकार के गले की फांस बन गई। नवीन आदेश में हायब्रिड मोड का जिक्र किया गया। हायब्रिड मोड क्या है, ये किसी को नहीं पता। किसान, उर्वरक व्यापारी एवं सहकारी संस्थायें सब बेसब्री से कृषि मंत्रालय वल्लभ भवन से जारी होने वाले नये आदेश का इंतजार कर रहे हैं। हायब्रिड मोड के आदेश के पश्चात दो सप्ताह बीत जाने के बाद भी अभी नया आदेश जारी नहीं हो सका है। कई जिलों के कृषि अधिकारियों ने अपने स्तर पर उर्वरक वितरण व्यवस्था बनाने का प्रयास किया है।

पिछले 40 वर्षों के दौरान पहली बार महसूस हुआ कि कृषि विभाग वर्तमान में नेतृत्व विहीन है। खेती के लिये उर्वरक सबसे प्रमुख आदान है। सरकार उसका सही ढंग से वितरण सुनिश्चित नहीं कर पा रही है। कृषि उत्पादन आयुक्त की अध्यक्षता में बनी समिति होशंगाबाद एवं हरदा जिले के किसानों से संवाद कर रही है। क्या प्रदेश के अन्य जिलों के किसान उर्वरक वितरण व्यवस्था से संतुष्ट हैं? क्या अन्य जिलों के किसानों एवं संबंधित से विचार-विमर्श करना उचित नहीं होगा? इस साल वैसे भी किसानों के लिए संकट का वर्ष प्रतीत हो रहा है। 70 प्रतिशत से अधिक जिलों में मानसूनी बारिश का अभाव है। यदि यही स्थिति अगस्त महीने में भी रहती है तो विकराल सूखे को कोई टाल नहीं सकता। खरीफ के साथ ही रबी फसलों पर भी संकट बरकरार है। अब सवाल यह उठता है कि सरकार की आकस्मिक कार्य योजना कहां गई? कब आयेगी अस्तित्व में। क्या इसमें भी हायब्रिड मोड से काम होगा? इस समय मध्यप्रदेश का समूचा किसान कल्याण विभाग हायब्रिड मोड पर है। इसमें किसानों का कल्याण होगा या सरकार का, ये तो समय बतायेगा।

137 लाख हेक्टेयर में खरीफ बुवाई पूरी

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल। इस साल अनियमित मानसून के कारण खरीफ फसलों की बुवाई पर विपरीत असर पड़ा है। हालांकि धान की फसल को छोड़कर अन्य फसलों की बुवाई लगभग पूरी हो गयी है। कम बारशि के कारण बोयी गई फसलों की बढ़वार प्रभावित हुई है। जिन धान उत्पादक क्षेत्रों में इस हफ्ते बारिश हुई है वहां पर धान की रोपाई का काम तेजी से किया जा रहा है।

कृषि संचालनालय, भोपाल से प्राप्त जानकारी के अनुसार 3 अगस्त 2026 तक प्रदेश में 136.60 लाख हेक्टेयर में खरीफ फसलों की बुवाई की गई है। गत वर्ष समान अवधि में 137.45 लाख हेक्टेयर में बुवाई की गयी थी। चालू खरीफ में 150.45 लाख हेक्टेयर में खरीफ फसलों की बुवाई प्रस्तावित है। सबसे अधिक 54.41 लाख हेक्टेयर में सोयाबीन बोया गया है। जो कि समान अवधि में पिछले साल की बुवाई 51.17 लाख हेक्टेयर से अधिक है। बारिश की कमी से धान की बुवाई पर इस साल विपरीत असर पड़ा है। धान की बुवाई एवं रोपाई 28.78 लाख हेक्टेयर में की गई है जबकि पिछले साल समान अवधि में 33.92 लाख हेक्टेयर में यह बुवाई हुई थी। अभी भी किसानों द्वारा धान की रोपाई का कार्य किया जा रहा है। मक्का की बुवाई 26.53 लाख हेक्टेयर में की गई है जो पिछले साल की बुवाई 25.61 लाख हेक्टेयर से अधिक है। उड़द 6.97 लाख हेक्टेयर में बोया गया है। पिछले साल समान अवधि में 5.92 लाख हेक्टेयर में उड़द बोया गया था।

धान की बुवाई पिछले साल की अपेक्षा कम

कपास की बुवाई 5.81 लाख हेक्टेयर में हुई है। जो पिछले साल की बुवाई 5.56 लाख हेक्टेयर से अधिक है। मूंगफली 5.86 लाख हेक्टेयर में बोयी गई है। समान अवधि में गत वर्ष 4.02 लाख हेक्टेयर में यह बुवाई हुई थी। प्रमुख दलहन फसल अरहर की बुवाई 2.44 लाख हेक्टेयर में हुई है जो पिछले साल की बुवाई से कम है। पिछले साल समान अवधि में 3.24 लाख हेक्टेयर में अरहर बोयी गयी थी। तिल की बुवाई 2.34 लाख हेक्टेयर में की गयी है। खरीफ की अन्य फसलों ज्वार 67 हजार हेक्टेयर, मूंग 65 हजार हेक्टेयर, बाजरा 3.22 लाख हेक्टेयर एवं कोदो इत्यादि 1.08 लाख हेक्टेयर में बोया गया है। सभी खरीफ फसलों को इस समय अच्छी बारिश का बेसब्री से इंतजार है। दलहनी एवं तिलहनी फसलों में कीट आदि के प्रकोप की सूचना मिल रही है।

प्रमुख खरीफ फसलों की बुवाई

फसल	सा.क्षे	गत वर्ष की बोनी	लक्ष्य 2026	सामान अवधि की बोनी	बुवाई 2026
धान	38.09	42.10	39.63	33.92	28.78
ज्वार	1.01	0.50	0.85	1.00	0.67
मक्का	15.77	27.13	27.53	25.61	26.33
बाजरा	3.51	2.37	3.81	2.29	3.22
कोदो	1.11	1.04	1.57	1.50	1.08
तुअर	1.83	1.49	2.17	3.24	2.44
उड़द	10.56	3.35	5.31	5.92	6.97
मूंग	0.51	0.44	0.79	0.94	0.65
सोयाबीन	60.18	54.70	54.09	51.17	52.41
मूंगफली	4.46	4.17	6.17	4.02	5.86
तिल	3.02	1.86	2.44	2.19	2.34
कपास	5.82	5.59	5.72	5.56	5.81
खरीफ योग	145.98	144.83	150.45	137.45	136.60

(क्षेत्र लाख हेक्टेयर में)

सीएम ने किया जन विश्वास अभियान का शुभारंभ

जन सेवा में संवेदनशीलता ही सुशासन की पहचान : मुख्यमंत्री

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 'मुख्यमंत्री जन विश्वास अभियान' का शुभारंभ करते हुए छिंदवाड़ा जिले के कलेक्ट्रेट में

आमजन की समस्याओं को सुना। उन्होंने सीएम हेल्पलाइन पोर्टल पर लंबित शिकायतों की आवेदकों की उपस्थिति में एक-एक कर समीक्षा की। मुख्यमंत्री ने कहा कि शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ समय पर पात्र हितग्राहियों तक पहुंचाना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसमें किसी भी स्तर पर लापरवाही, उदासीनता अथवा अनावश्यक विलंब स्वीकार नहीं किया जाएगा। समीक्षा के दौरान जिन प्रकरणों में अधिकारियों एवं कर्मचारियों की लापरवाही सामने आई, उन पर उन्होंने तत्काल सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए। साथ ही पात्र हितग्राहियों को शीघ्र राहत उपलब्ध कराते हुए योजनाओं का लाभ सुनिश्चित करने पर भी जोर दिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विकास और जनकल्याण के लिए राज्य सरकार दूरगामी विजन के साथ कार्य कर रही है। छिंदवाड़ा से एक नई शुरुआत की जा रही है। अब प्रत्येक शुक्रवार को किसी भी दफ्तर में कोई मीटिंग नहीं होगी। सभी अधिकारी जनता के बीच मौजूद रहकर मैदानी स्तर पर शासकीय योजनाओं और कार्यक्रमों के क्रियान्वयन का जायजा लेंगे। जन विश्वास अभियान में आम नागरिकों की बेहतरी और उन्हें सुविधा उपलब्ध कराने के लिए मैदानी स्तर पर आने वाली कठिनाईयों का समाधान किया जाएगा। अभियान आगामी 7 जनवरी 2027 तक चलेगा। कार्यक्रम में लोक निर्माण विभाग एवं जिले के प्रभारी मंत्री राकेश सिंह, सांसद विवेक बंटी साहू, विधायक कमलेश प्रताप शाह, महापौर विक्रम आहके, शेषराव यादव, मुख्य सचिव अशोक बर्णवाल, सचिव डॉ. सुदाम खाड़े, संभागायुक्त सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

7 अगस्त से 20 जनवरी तक चलेगा जनविश्वास अभियान

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेश की साढ़े 8 करोड़ से अधिक आबादी के प्रति विश्वास के प्रतीक जन-विश्वास अभियान का शुभारंभ 7 अगस्त 2026 को छिंदवाड़ा से किया। अभियान के अंतर्गत मंत्रालय से लेकर जिले तक के सभी अधिकारी अब से प्रत्येक शुक्रवार को दफ्तर छोड़कर फील्ड में जनमानस के सामने होंगे। यह अभियान 20 जनवरी 2027 तक चलेगा। अभियान में भोपाल से लेकर संभाग और जिले तक सभी वरिष्ठ अधिकारी फील्ड भ्रमण पर रहेंगे और अभियान में मुख्यमंत्री, मंत्रीगण, शासन के वरिष्ठ अधिकारी एवं स्थानीय जनप्रतिनिधि भी सम्मिलित होंगे। अभियान के तहत जिला कलेक्टर, जिले के अधिकारियों के साथ फील्ड में दौरा करेंगे। दो प्रकार के जन-संवाद और उद्योग संवाद आयोजित किए जाएंगे। मुख्यमंत्री एवं मुख्य सचिव पूर्व निर्धारित कार्यक्रम अनुसार जिलों में पहुंचेंगे।

पंचायत चुनाव ईवीएम से होंगे

भोपाल। मध्यप्रदेश में अगले साल होने वाले त्रि-स्तरीय पंचायत एवं नगरीय निकाय के चुनाव ईवीएम (इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन) से कराये जायेंगे। पहली बार ईवीएम से होने जा रहे इन ग्राम सरकारों का चुनाव जून-जुलाई 2027 में होगा। प्राप्त जानकारी के अनुसार 23 हजार ग्राम पंचायतों के चुनाव जुलाई में कराये जायेंगे। इसके साथ ही जनपद एवं जिला पंचायत के चुनाव भी होंगे। 423 नगरीय निकायों का चुनाव जून में प्रस्तावित है। राज्य निर्वाचन आयोग में इस संबंध में व्यापक

तैयारियां की जा रही है। चूंकि वर्ष 2028 में प्रदेश में विधानसभा चुनाव एवं वर्ष 2029 के शुरू में लोकसभा चुनाव होना है इसलिये सरकार पंचायत चुनाव पहले निश्चित समयावधि में कराना चाहती है।

अगस्त में झमाझम बारिश के असार

भोपाल। ज्योतिषीय गणना के आधार पर पंडित विनोद गौतम ने बताया कि अगस्त माह में देशभर में झमाझम बारिश के आसार बन रहे हैं। 10 अगस्त से आर्द्रा नक्षत्र की शुरूआत और मंगल ग्रह की राशि बदलने से कई योग अनुकूल वर्षा में लाभकारी होंगे। इस दौरान पवित्र सावन माह चल रहा है। प्रदोष व्रत, नागपंचमी, सावन सोमवार इत्यादि पुष्य नक्षत्र में होने से कई संयोग बन रहे हैं। उन्होंने ज्योतिषीय गणना के आधार पर बताया कि 10 अगस्त से

28 अगस्त तक देशभर में अच्छी बारिश के योग बन रहे हैं। मध्यप्रदेश देश के मध्य में स्थित होने से भरपूर बारिश का साक्षी बनेगा। इस बीच मौसम विभाग ने अगस्त में सामान्य से कम बारिश का अनुमान बताया है।

किसानों के लिए कवच योजना मंजूर

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में आयोजित मध्य प्रदेश कैबिनेट की बैठक में राज्य के किसानों के हित में एक बड़ा और महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया है। प्रदेश की प्राथमिक कृषि सहकारी समितियों के डिफाल्टर किसानों को राहत प्रदान करने के लिए राज्य सरकार ने 'कवच योजना' को हरी झंडी दे दी है। सरकार के इस कदम से कर्ज के बोझ तले दबे प्रदेश के हजारों किसानों को बड़ी राहत मिलने की उम्मीद है। मंत्रिपरिषद द्वारा मंजूर की गई 'कवच योजना' के लागू होने से प्रदेश के लगभग 5000 डिफाल्टर किसानों को सीधा लाभ प्राप्त होगा। प्राथमिक कृषि सहकारी समितियों से जुड़े ये किसान लंबे समय से राहत की उम्मीद कर रहे थे। इस योजना के माध्यम से उन्हें वित्तीय संकट से उबारने और पुनः मुख्यधारा की बैंकिंग व कृषि ऋण व्यवस्था से जोड़ने का प्रयास किया जाएगा। कवच योजना के क्रियान्वयन के लिए वित्तीय व्यवस्था भी तय कर दी गई है। योजना के अंतर्गत कुल राशि में राज्य सरकार और सहकारी बैंकों का आधा-आधा अंशदान रहेगा। इसमें 50 करोड़ रुपये की राशि जिला सहकारी केंद्रीय बैंक और अपेक्स बैंक मिलकर लगाएंगे, जबकि इतनी ही राशि यानी 50 करोड़ रुपये का योगदान राज्य सरकार द्वारा दिया जाएगा। इस प्रकार 100 करोड़ रुपये के वित्तीय प्रावधान के साथ इस योजना के जरिए डिफाल्टर किसानों का वित्तीय बोझ कम किया जाएगा।

धान रोपाई में आयी तेजी

भोपाल। पिछले दो महीनों के बाद धान उत्पादक क्षेत्रों में तेज बारिश का दौर देखने में आया है। पहली बारी रीवा, सीधी, मऊगंज, शहडोल, बालाघाट, मंडला एवं जबलपुर के साथ ही अन्य क्षेत्रों में हुई तेज बरसात से धान रोपाई में तेजी आयी है। अगस्त माह के प्रथम सप्ताह में हुई तेज वर्षा से किसानों के चेहरों पर खुशी देखने को मिली है। मौसम विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार बारिश का यह दौर 28 अगस्त तक रूक, रूककर जारी रहेगा। बंगाल की

खाड़ी में बना कम दबाव का क्षेत्र एवं पश्चिमी विक्षोभ के कारण अधिकांश क्षेत्रों में बारिश होने का अनुमान हैं। धान की रोपाई एवं बुवाई जो पिछले हफ्ते 20 प्रतिशत पीछे चल रही थी इस सप्ताह भरपाई होने की उम्मीद है।

दतिया में कांग्रेस की जीत

विधानसभा उप चुनाव में 2 सीटों पर बीजेपी की हार

भोपाल। देश के तीन प्रदेशों की तीन विधानसभा सीटों पर हुए उप चुनाव में भाजपा को गुजरात की मंजलपुर विधानसभा सीट पर जीत मिली, जबकि मध्यप्रदेश की दतिया विधानसभा सीट में कांग्रेस एवं बिहार की बांकीपुर विधानसभा सीट से जनसुराज पार्टी को जीत मिली। दतिया विधानसभा उपचुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी घनश्याम सिंह ने भाजपा के आशुतोष तिवारी को 6,016 वोटों से हराकर सीट पर कब्जा कर लिया। कांग्रेस को 66,757 (42.39 प्रतिशत) वोट मिले, जबकि भाजपा 60,741 (38.57 प्रतिशत) वोटों पर सिमट गई। बांकीपुर विधानसभा उपचुनाव में जन सुराज के संस्थापक प्रशांत किशोर ने 64,151 वोट हासिल कर शानदार जीत दर्ज की। भाजपा के नीरज कुमार को 44,827 और राजद की रेखा कुमारी को 14,273 वोट मिले। गुजरात के वडोदरा जिले की मंजलपुर विधानसभा सीट पर भाजपा ने अपनी सीट बरकरार रखी। भाजपा उम्मीदवार सतीश गोविंदभाई पटेल ने कांग्रेस के उम्मीदवार और पूर्व मंत्री भीखाभाई रबारी को 30,630 वोटों से हराया।

20 अगस्त तक होगा ग्रीष्मकालीन मूंग-उड़द का उपार्जन

भोपाल। किसान कल्याण और कृषि विकास विभाग ने प्रदेश के किसानों के हित में महत्वपूर्ण फैसले लेते हुए ग्रीष्मकालीन मूंग और उड़द के खरीद की अंतिम तारीख बढ़ाकर किसानों को बड़ी राहत दी गई है। उपार्जन प्राइस सपोर्ट स्कीम के

अंतर्गत मूंग उत्पादक किसानों के हित में मूंग एवं उड़द उत्पार्जन की अंतिम तिथि 20 अगस्त कर दी है। इसके तहत किसान को आधार कार्ड, मोबाइल नंबर, रजिस्टर में पूरा ब्यौरा दर्ज करना होगा। उल्लेखनीय है कि खाद वितरण को पारदर्शी बनाने के लिए हाइब्रिड मोड लागू किया गया है। किसानों के हित में उपार्जन नीति में आंशिक संशोधन करते हुए मूंग का उपार्जन कृषकों के उत्पादन का 60 प्रतिशत किये जाने का प्रावधान किया गया है। उड़द एवं ग्रीष्मकालीन मूंग उपार्जन की नई उपलब्धि हासिल हुई है। सरकार ने एमएसपी के अलावा उड़द के उपार्जन पर 600 रूपये प्रति क्विंटल बोनस देने का ऐतिहासिक निर्णय लिया है। इससे प्रदेश को दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भर बनने में गति मिलेगी।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अमरेन्द्र मिश्रा द्वारा के डी प्रिंटर्स, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल से मुद्रित एवं एफ.एम. 16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, रानी कमलापति स्टेशन के सामने, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- अमरेन्द्र मिश्रा। इस अंक का मूल्य- 13/- वार्षिक शुल्क- 700/- फोन: (0755) 4233824, आरएनआई नं. : MP HIN/2000/06836 Krishak Doot also available on YouTube

इथेनॉल से किसानों की आय बढ़ेगी एवं ऊर्जा सुरक्षा भी होगी मजबूतः श्री चौहान

केन्द्रीय कृषि मंत्री ने किसान नेताओं से इथेनॉल और किसानों की आय पर की चर्चा

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान से कृषि भवन में ऑल इंडिया किसान कोऑर्डिनेशन कमेटी के प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात कर इथेनॉल नीति का जोरदार समर्थन किया। किसान नेताओं ने कहा कि इथेनॉल कृषि क्षेत्र के लिए नया अवसर है, बशर्ते इसका लाभ सीधे किसानों तक पहुंचे और नीति पूरी तरह किसान-केंद्रित हो।

बैठक में पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, तेलंगाना और तमिलनाडु सहित विभिन्न राज्यों के किसान नेताओं ने कहा कि इथेनॉल से किसानों की फसलों को ऊर्जा बाजार तक पहुंच मिलेगी, जिससे गन्ना, मक्का, चावल और अन्य फीडस्टॉक उत्पादकों के लिए नए बाजार खुलेंगे। इससे फसलों के बेहतर दाम मिलने के साथ भंडारण और विपणन की समस्याएं भी कम होंगी।

किसान प्रतिनिधियों ने इथेनॉल को लेकर फैलाए जा रहे भ्रम और नकारात्मक प्रचार पर चिंता जताते हुए कहा कि सरकार और किसान संगठनों को मिलकर वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर सही जानकारी लोगों तक पहुंचानी चाहिए। श्री चौहान ने किसानों के सुझावों को गंभीरता से सुनते हुए कहा कि कृषि भवन के दरवाजे किसानों के लिए हमेशा खुले हैं। उन्होंने कहा कि सरकार का उद्देश्य इथेनॉल कार्यक्रम का सबसे अधिक लाभ किसानों तक पहुंचाना है।

कृषि में उन्नत तकनीक से ग्रामीण क्षेत्रों में अर्थव्यवस्था को मजबूती : श्री मल्होत्रा

मुंबई। ग्रामीण अर्थव्यवस्था और कृषि क्षेत्र बीते 15 वर्षों में ज्यादा मजबूत हुए हैं। भारतीय रिजर्व बैंक की डिप्टी गवर्नर पूनम गुप्ता ने बताया कि इसका कारण खेती से जुड़े कामों में बढ़ोतरी, सिंचाई क्षेत्र का बढ़ता दायरा, खेती में मशीनों का ज्यादा इस्तेमाल और फसल व बीज की बेहतर किस्में हैं।

गुप्ता ने मौद्रिक नीति समिति की बैठक के बाद हुए संवाददाता सम्मेलन में बताया कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था समय के साथ मजबूत हुई है। इससे बारिश की कमी और मौसम से जुड़ी अनिश्चितताओं का खेती के उत्पादन पर असर कम हुआ है। खेती और उससे जुड़े क्षेत्रों ने एक-दूसरे का साथ दिया है। इससे जिन वर्षों में खेती का उत्पादन कम रहा,

उन वर्षों में खेती से जुड़े कार्यों ने अच्छा प्रदर्शन किया।

गुप्ता ने कहा, 'अगर आप सरकार के कुछ उपायों को देखें तो अब सिंचाई वाले इलाके का हिस्सा काफी बढ़ गया है। इसमें लगातार बढ़ोतरी हो रही है। इसका अर्थ है कि बारिश की कमी और मौसम के उतार-चढ़ाव मायने तो रखते हैं लेकिन पहले के मुकाबले अब उनका असर कम होता है।' उन्होंने कहा कि खेती के लिए ऋण मिलने में आसानी, खेती में मशीनों का ज्यादा इस्तेमाल और फसल व बीज की बेहतर किस्मों ने भी इस क्षेत्र को मजबूत किया है। उन्होंने कहा, ये सभी उपाय कुल मिलाकर अच्छी ग्रामीण अर्थव्यवस्था और बहुत मजबूत कृषि क्षेत्र की ओर इशारा करते हैं।'

आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा ने कहा कि 'मॉनसून अभी भी बन रहा है। अल-नीनो की स्थितियां बनी हैं, लेकिन इसके उलट एक और वायुमंडलीय घटना भी है जो शायद अल-नीनो के असर को कुछ हद तक कम कर सकता है।' मल्होत्रा ने कहा कि कृषि क्षेत्र ने समय के साथ मजबूती दिखाई है और खेती से जुड़े कामों ने परिवारों को खेती का उत्पादन कम होने पर आय के नुकसान की भरपाई करने में मदद की है। उन्होंने कहा, हमने देखा है कि अगर खेती अच्छा नहीं कर रही होती है, तो खेती से जुड़े काम बेहतर प्रदर्शन करते हैं।

गोबरधन योजना को दी मंजूरी

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने देश में स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देने और किसानों की आय बढ़ाने के उद्देश्य से गोबरधन राष्ट्रीय सर्कुलर बायोएनर्जी योजना को मंजूरी दे दी है। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने इस योजना के लिए 23,731 करोड़ रुपये के कुल बजट को स्वीकृति दी है। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कैबिनेट के फैसलों की जानकारी देते हुए बताया कि यह योजना वित्त वर्ष 2026-27 से 2035-36 तक लागू रहेगी। इसका उद्देश्य देश में कंप्रेस्ड बायोगैस के उत्पादन को लगभग 10 गुना बढ़ाना है। सरकार के अनुसार इस योजना के तहत कृषि अवशेष, गोबर, चीनी मिलों से निकलने वाला प्रेसमड, नगर निगम का जैविक कचरा और अन्य बायोमास का उपयोग कर स्वच्छ ईंधन तैयार किया जाएगा। इससे स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन के साथ-साथ जैविक खाद, किसानों की अतिरिक्त आय और ग्रामीण रोजगार को भी बढ़ावा मिलेगा।

26 करोड़ से अधिक सॉयल हेल्थ कार्ड जारी

नई दिल्ली। केंद्र सरकार देश में मिट्टी की गुणवत्ता सुधारने और रासायनिक उर्वरकों, खाद तथा खरपतवारनाशकों के संतुलित उपयोग को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं चला रही है। सरकार का लक्ष्य मिट्टी के क्षरण को रोकना, खेती की लागत कम करना और किसानों को टिकाऊ खेती अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना है। लोकसभा में कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री रामनाथ ठाकुर ने लिखित उत्तर में बताया कि सॉयल हेल्थ एंड फर्टिलिटी योजना के तहत किसानों को मिट्टी की जांच के आधार पर फसलवार उर्वरक उपयोग की सलाह दी जा रही है।सरकार के अनुसार अब तक देशभर में 26.09 करोड़ सॉयल हेल्थ कार्ड जारी किए जा चुके हैं। इसके साथ ही किसानों को जागरूक करने के लिए 1,30,627 किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम, 7.17 लाख प्रदर्शन (डेमोंस्ट्रेशन), 7,425 किसान मेले एवं जागरूकता अभियान आयोजित किए गए हैं। सॉयल हेल्थ कार्ड से किसानों को मिट्टी की पोषक तत्व स्थिति की जानकारी मिलती है, जिससे संतुलित उर्वरक उपयोग, लागत में कमी और बेहतर उत्पादन संभव हो रहा है।

आईसीएआर की बेहतर अरहर किस्मों से विकास को मिलेगी नई गति

नई दिल्ली। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने अरहर की किस्म 'आशा' का भारत का पहला पूर्ण रूप से एनोटेटेड टेलोमेयर-से-टेलोमेयर संदर्भ जीनोम विकसित कर एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक उपलब्धि हासिल की है। इस जीनोम अनुक्रम को अरहर के वैश्विक संदर्भ जीनोम के रूप में भी मान्यता मिली है। इससे जलवायु अनुकूल, अधिक उपज देने वाली और पोषण से भरपूर नई अरहर किस्मों के विकास में तेजी आने की उम्मीद है।

यह उपलब्धि नई दिल्ली स्थित आईसीएआर-राष्ट्रीय पादप जैव प्रौद्योगिकी संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा हासिल की गई है। उल्लेखनीय है कि इसी संस्थान ने वर्ष 2011 में दुनिया का पहला दलहन फसल का ड्राफ्ट जीनोम प्रकाशित किया था। नवीनतम शोध उसी कार्य का उन्नत रूप है,

जो अब अरहर का पूर्ण आनुवंशिक खाका उपलब्ध कराता है।

नव विकसित टेलोमेयर-से-टेलोमेयर जीनोम में लगभग 752.65 मिलियन बेस पेयर्स शामिल हैं और इसमें अरहर के सभी 11 गुणसूत्रों का संपूर्ण प्रतिनिधित्व है। वैज्ञानिकों ने इसमें 36,557 जीनों की पहचान की है, जिससे पौधों के महत्वपूर्ण कृषि एवं पोषण संबंधी गुणों से जुड़े जीनों की खोज, आणविक प्रजनन तथा जीनोम संपादन तकनीकों के उपयोग को नई गति मिलेगी। विशेषज्ञों के अनुसार, यह जीनोमिक संसाधन सूखा, गर्मी और अन्य जलवायु चुनौतियों को सहन करने वाली, अधिक उत्पादन देने वाली तथा बेहतर पोषण गुणवत्ता वाली अरहर किस्मों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इससे दलहन उत्पादन बढ़ाने, किसानों की आय में वृद्धि करने और देश की खाद्य एवं पोषण सुरक्षा को मजबूत करने में मदद मिलेगी। आईसीएआर देशभर में उच्च उपज, कीट एवं रोग प्रतिरोधी तथा जलवायु-अनुकूल दलहन किस्मों के विकास, उन्नत बीज उत्पादन, प्रौद्योगिकी प्रदर्शन और किसानों के प्रशिक्षण के माध्यम से दलहन क्षेत्र को सशक्त बना रहा है। यह उपलब्धि केंद्र सरकार के 'दलहन में आत्मनिर्भरता मिशन (2025-26 से 2030-31)' को भी नई मजबूती प्रदान करेगी, जिसका लक्ष्य वर्ष 2030-31 तक देश का दलहन उत्पादन लगभग 35 मिलियन टन तक पहुंचाना है।

आधार बायोमेट्रिक फेल होने पर भी बेच सकेंगे मूंग-उड़द

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने मूल्य समर्थन योजना के तहत जायद मूंग और उड़द की खरीद नियमों में ढील दी है। इस नई व्यवस्था के तहत आधार बायोमेट्रिक यानी फिंगरप्रिंट बार-बार फेल होने पर किसान अपने किसी प्रतिनिधि के माध्यम से अपनी उपज बेच सकेंगे।

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर इस फैसले की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि ऐसी रिपोर्ट आ रही थीं कि कई बार कोशिश करने के बावजूद कुछ किसानों के फिंगरप्रिंट प्रमाणित नहीं हो पा रहे थे, जिसके कारण वे अपनी फसल

नहीं बेच पा रहे थे। श्री चौहान के अनुसार केंद्र सरकार ने ऐसे किसानों के लिए यह खास छूट दी है जिससे वे एक नामित प्रतिनिधि के माध्यम से अपनी उपज बेच सकें।

केंद्रीय कृषि मंत्रालय के आदेश के अनुसार, यह सुविधा केवल तभी मिलेगी जब बायोमेट्रिक वेरिफिकेशन की सभी तय कोशिशें फेल हो जाएं। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान किसान का खरीद केंद्र पर शारीरिक रूप से मौजूद रहना अनिवार्य है। ऑनलाइन प्रक्रिया के जरिए प्रतिनिधि को मंजूरी देने से पहले किसान की पहचान की जाएगी। इसके बाद, प्रतिनिधि को फसल की खरीद पूरी करने के लिए आधार-आधारित ओटीपी ई-केवाईसी, बायोमेट्रिक ऑथेंटिकेशन और अपनी फोटो का वेरिफिकेशन कराना होगा। कृषि मंत्रालय ने स्पष्ट किया है कि फसल बिक्री का भुगतान केवल किसान के पंजीकृत बैंक खाते में ही किया जाएगा, प्रतिनिधि के खाते में नहीं।

साप्ताहिक सुविचार

आलसी मनुष्य अपना पुरुषार्थ गंवा देते हैं, जिससे उन्हें कहीं भी सफलता नहीं मिलती। – ऋग्वेद

उर्वरक वितरण का हायब्रिड मोड

कृषक दूत सम्पादकीय

हाल ही में किसानों के आंदोलन के बाद से मध्यप्रदेश सरकार ने ई-विकास प्रणाली को स्थगित करने का निर्णय लिया है। सरकार ने उर्वरक वितरण ई-टोकन के स्थान पर हायब्रिड मोड पर करने का आदेश जारी किया है। सचिव कृषि के हस्ताक्षर से जारी पत्र में हायब्रिड मोड का उल्लेख किया गया है। हायब्रिड मोड क्या है, ये किसी को नहीं पता। प्रदेश के इतिहास ऐसा पहली बार हुआ है जब उर्वरक वितरण व्यवस्था पेन्डुलम की भांति लटक रही है। नई उर्वरक वितरण व्यवस्था के लिये पत्र जारी किये हुए 11 दिन हो गये हैं, अभी तक स्पष्ट दिशा निर्देश जारी नहीं हो सका है। कई जिलों में उप संचालक कृषि ने स्व-विवेक से उर्वरक वितरण हेतु पत्र जारी किये हैं। इसमें ई-टोकन एवं पीओएस दोनों माध्यमों को जारी रखने का आदेश जारी किया गया है। कई जिलों में मंत्रालयीन आदेश का इंतजार है। इस बीच कृषि उत्पादन आयुक्त की अध्यक्षता में बनी समिति ने होशंगाबाद एवं हरदा जिले का दौरा करके सुझाव मांगा है। किसान प्रतिनिधियों से चर्चा करके प्रस्तावित नई उर्वरक वितरण व्यवस्था पर मंथन जारी है।

समिति के कार्यकलापों को देखकर ऐसा लग रहा है कि उर्वरक वितरण व्यवस्था क्या सिर्फ होशंगाबाद एवं हरदा के किसानों के लिए बनेगी? समिति को पूरे प्रदेश के किसानों एवं उर्वरक वितरण से जुड़े व्यक्तियों एवं संस्थाओं से चर्चा करके किसी निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए।

उर्वरक वितरण के लिए दीर्घकालीन एवं स्थायी नीति एवं नियम की जरूरत है। प्रदेश में सहकारी संस्थायें एवं निजी क्षेत्र के विक्रेताओं द्वारा किसानों को उर्वरक वितरण लंबे समय से किया जा रहा है। उर्वरक वितरण की नई नीति ऐसी बने जो किसान हितैषी हो। बिना झंझट के किसानों को दोनों माध्यमों से उर्वरक आसानी से मिल सके। उर्वरकों की कीमतें एक समान तय होनी चाहिए। उर्वरक वितरण की नई व्यवस्था आने के पश्चात सरकारी संस्थायें एवं निजी क्षेत्र के उर्वरक विक्रेताओं को इसका प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। नई व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जिसमें उर्वरकों की कालाबाजारी पर पूरी तरह रोक लगे। किसानों को आसानी से उर्वरकों की आपूर्ति हो। साथ ही पोषक तत्व आधारित उर्वरकों के उपयोग को बढ़ावा मिले।

रेशम उत्पादन की ओर बढ़ा आर.ए.के. कृषि महाविद्यालय

शहतूत रोपण से छात्रों को मिलेगा व्यावहारिक प्रशिक्षण

ग्वालियर। आर.ए.के. कृषि महाविद्यालय, सीहोर के कीट विज्ञान विभाग ने रेशम कीट पालन (सेरीकल्चर) के व्यावहारिक प्रशिक्षण को नई दिशा देने के उद्देश्य से महाविद्यालय परिसर में शहतूत (मलबरी) के पौधों का रोपण किया। यह पहल विद्यार्थियों को कक्षा शिक्षण के साथ-साथ खेत स्तर पर व्यावहारिक प्रशिक्षण उपलब्ध कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

शहतूत की पत्तियाँ रेशम कीट का प्रमुख आहार होती हैं। पौधों के विकसित होने के बाद महाविद्यालय परिसर में ही रेशम कीट पालन, कोकून निर्माण तथा रेशम उत्पादन की संपूर्ण प्रक्रिया का प्रत्यक्ष प्रदर्शन किया जाएगा। इससे विद्यार्थियों को आधुनिक सेरीकल्चर तकनीकों का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त होगा तथा कौशल आधारित शिक्षा को बढ़ावा मिलेगा।

महाविद्यालय के अधिष्ठाता के मार्गदर्शन में आयोजित पौधरोपण कार्यक्रम में कीट विज्ञान विभाग के डॉ. निलेश रायपुरिया, डॉ. भरत लाल एवं डॉ. सुधीर चौहान सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। अधिष्ठाता ने कहा कि इस पहल से छात्र शहतूत उत्पादन से लेकर रेशम कीट पालन एवं कोकून निर्माण तक की संपूर्ण प्रक्रिया को निकट से समझ सकेंगे। इससे उनकी तकनीकी दक्षता में वृद्धि होगी तथा भविष्य में स्वरोजगार और उद्यमिता के नए अवसर भी उपलब्ध होंगे। महाविद्यालय का यह प्रयास कृषि शिक्षा को अधिक व्यावहारिक, कौशल आधारित तथा रोजगारोन्मुख बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल माना जा रहा है।

25 कृषकों के खेतों पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन का आयोजन

धार। भारतीय आईसीएआर भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान द्वारा वित्त पोषित एवं आदिवासी उपयोजना के अंतर्गत कृषि विज्ञान केंद्र, धार द्वारा दो दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस योजना के तहत चयनित 25 कृषकों के प्रक्षेत्र पर दलहनी फसल उड़द का अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन आयोजित किया गया है। इस दौरान योजना के तहत शामिल सभी 25 कृषकों को आवश्यक कृषि आदान का भी वितरण किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित वैज्ञानिकों द्वारा कृषकों को दलहनी फसलों की वैज्ञानिक खेती एवं कीट-रोग प्रबंधन पर महत्वपूर्ण मार्गदर्शन दिया गया। कृषि विज्ञान केंद्र, धार के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एस.एस. चौहान ने किसानों को संबोधित करते हुए बताया कि आदिवासी उपयोजना का मुख्य उद्देश्य जनजातीय क्षेत्रों के किसानों की आय में वृद्धि करना और दलहनी फसलों के उत्पादन को बढ़ावा देना है। डॉ. चौहान ने उड़द की उन्नत किस्मों की विशेषताओं, समय पर बोवनी और एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वैज्ञानिक तकनीकों के प्रयोग से न केवल प्रति हेक्टेयर उपज में वृद्धि होगी, बल्कि मिट्टी की जैविक उर्वरता में भी सुधार होगा।

कृषि विज्ञान केंद्र के तकनीकी अधिकारी डॉ. डी.एस. मण्डलोई ने कृषकों को उड़द की फसल में लगने वाले प्रमुख कीटों एवं बीमारियों की पहचान तथा उनके जैविक व रासायनिक नियंत्रण के प्रभावी उपायों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने किसानों को खेत में जल-निकासी की उचित व्यवस्था रखने तथा बीजोपचार के महत्व के बारे में भी जागरूक किया। केंद्र के वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी रीतेश जैन ने कृषकों को आधुनिक कृषि में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका से अवगत कराया। उन्होंने किसानों को इस सेवा का अधिक से अधिक लाभ उठाने हेतु पंजीकृत होने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में केंद्र के भूपेंद्र कुमार कुर्मी, गणेश निगवाल, जितेंद्र नायक, जीवन निगवाल तथा विशेष नलवाया की सक्रिय उपस्थिति एवं सराहनीय योगदान रहा।

फसलों में कीट-रोग से बचाव की सलाह

हरदा। कृषि विज्ञान केन्द्र के कृषि वैज्ञानिक डॉ. ओपी भारती और डॉ. आरसी जाटव ने ग्राम कांकरिया और मसनगांव का भ्रमण कर फसलों का निरीक्षण किया। इस दौरान सोयाबीन में गर्डल्ड बीटल, तना मक्खी, सफेद मक्खी, पीला मोजेक रोग तथा आयरन और सल्फर की कमी के लक्षण मिले। उड़द में एन्थेक्नोज रोग भी पाया गया। वैज्ञानिकों ने किसानों को सलाह दी कि सोयाबीन में तना मक्खी और सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए थायमेथोक्साम 12.60 प्रतिशत लैम्ब्डासायहेलोथ्रिन 9.5 प्रतिशत जेडसी 50 मिली प्रति एकड़ या बीटा सायफ्लुथिन + इमिडाक्लोप्रिड 140 मिली प्रति एकड़ का छिड़काव करें। सेमीलूपर इल्ली के नियंत्रण के लिए क्लोरएंट्रानीलीप्रोल 18.5 एससी 60 मिली या इमामेक्टिन बैंजोएट 1.90 प्रतिशत 170 मिली प्रति एकड़ का छिड़काव किया जा सकता है। पीला मोजेक रोग दिखाई देने पर रोगग्रस्त पौधों को तुरंत उखाड़कर खेत से बाहर करें। सफेद मक्खी की रोकथाम के लिए खेत में पीले चिपचिपे जाल लगाएं।

अनमोल वचन

यदि तुम अच्छा बनना चाहते हो तो अपने आपको सबसे बुरा समझो। – मुनि विद्यानंद

पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

श्रावण कृष्ण/शुक्ल विक्रम संवत 2083 ईस्वी सन् 2026

दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
11 अगस्त 26	मंगलवार	श्रावण कृष्ण पक्ष-14	
12 अगस्त 26	बुधवार	श्रावण कृष्ण पक्ष-30	हरियाली अमावस
13 अगस्त 26	गुरुवार	श्रावण शुक्ल पक्ष-1	
14 अगस्त 26	शुक्रवार	श्रावण शुक्ल पक्ष-2	
15 अगस्त 26	शनिवार	श्रावण शुक्ल पक्ष-3	स्वतंत्रता दिवस
16 अगस्त 26	रविवार	श्रावण शुक्ल पक्ष-4	
17 अगस्त 26	सोमवार	श्रावण शुक्ल पक्ष-5	नागपंचमी तृतीय श्रावण सोमवार
18 अगस्त 26	मंगलवार	श्रावण शुक्ल पक्ष-6	
19 अगस्त 26	बुधवार	श्रावण शुक्ल पक्ष-7	
20 अगस्त 26	गुरुवार	श्रावण शुक्ल पक्ष-8	
21 अगस्त 26	शुक्रवार	श्रावण शुक्ल पक्ष-9	
22 अगस्त 26	शनिवार	श्रावण शुक्ल पक्ष-10	
23 अगस्त 26	रविवार	श्रावण शुक्ल पक्ष-11	पवित्रा एकादशी
24 अगस्त 26	सोमवार	श्रावण शुक्ल पक्ष-12	चतुर्थ श्रावण सोमवार

कपास के प्रमुख कीट एवं उनकी रोकथाम

- **डॉ. डी.के. सूर्यवंशी** (वैज्ञानिक पौध संरक्षण)
- **डॉ. ए.एल. बसेडिया** (वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख)
- **डॉ. नरेश गुप्ता** (वरिष्ठ तकनिकी अधिकारी)
- **श्री डी.आर. चौहान** (वरिष्ठ तकनिकी अधिकारी)

कृषि विज्ञान केंद्र मनावर, जिला धार (म.प्र.)

▸ रस चूसने वाले कीट: ये कीट मुख्य रूप से फसल के शुरुआती 30 से 90 दिनों के भीतर हमला करते हैं।

सफेद मक्खी

▸ **लक्षण:** इसके छोटे पीले-सफेद रंग के शिशु और वयस्क पत्तियों की निचली सतह से रस चूसते हैं। रस चूसने के साथ यह मक्खी एक चिपचिपा पदार्थ मल के रूप में छोड़ती है। इस पदार्थ पर काली फफूंद जम जाती है, जिससे पत्तियां काली पड़ जाती हैं और प्रकाश संश्लेषण रुक जाता है। यह कीट पत्ती मरोड़ रोगवायरस का वाहक भी है।

नियंत्रण

▸ खेत में प्रति एकड़ 10-12 पीले चिपचिपे कार्ड लगाएं।

▸ आर्थिक कगार (5-6 मक्खी प्रति पत्ती) होने पर एसिटामिप्रिड 20 प्रतिशत एसपी की 40-50 ग्राम मात्रा या डायफेन्थियूरॉन 50 प्रतिशत डब्ल्यूपी की 240 ग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें।

हरा तेला/जसिड

▸ **लक्षण:** इस कीट के शिशु और वयस्क पत्तियों के किनारों से रस चूसते हैं। इनके थूक में मौजूद विषैले तत्व के कारण पत्तियों के किनारे पहले पीले, फिर लाल-भूरे होकर नीचे की तरफ मुड़ने लगते हैं। इसे हॉपर बर्न कहा जाता है। पत्तियां कप के आकार की होकर सूख जाती हैं।

नियंत्रण: ▸ इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एसएल की 40-50 मिली मात्रा या थियामेथोक्सम 25 प्रतिशत डब्ल्यूजी की 40 ग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ स्प्रे करें।

थ्रिप्स

▸ **लक्षण:** यह बहुत ही बारीक कीट होता है जो पत्तियों की ऊपरी और निचली सतह को खुरच कर उसका रस चूसता है। इसके प्रभाव से पत्तियों पर चांदी जैसी चमक दिखाई देने लगती है और पत्तियां ऊपर की तरफ मुड़कर नाव के आकार की हो जाती हैं।

नियंत्रण ▸ रस चूसने वाले सभी कीटों की शुरुआती अवस्था में नीम का तेल (1500 पीपीएम) 1 लीटर प्रति एकड़ की दर से छिड़कना बहुत फायदेमंद रहता है।

▸ डेन्डू छेदक कीट : ये कीट फसल में फूल आने और डेन्डू बनने की अवस्था (60 से 120 दिन) पर सबसे ज्यादा हमला करते हैं।

गुलाबी सुंडी

▸ **लक्षण:** इसकी छोटी सुंडी सीधे फूल की कली या कोमल डेन्डू के अंदर घुस जाती है और प्रवेश द्वार को बंद कर देती है। प्रभावित फूल पूरी तरह खिल नहीं पाते और गुलाब के फूल जैसे दिखाई देते हैं। यह डेन्डू के अंदर रहकर बीजों (बिनौले) को खाती है, जिससे कपास का रेशा पूरी तरह नष्ट हो जाता है और डेन्डू आधे खिले ही सड़ जाते हैं।

नियंत्रण ▸ बुवाई के 45 दिन बाद खेत में 4-5 फेरोमोन ट्रैप ;प्रति एकड़ लगाएं ताकि वयस्क पतंगों की निगरानी हो सके।

▸ यदि ट्रैप में लगातार 3 दिन तक 8 या अधिक पतंगे प्रति ट्रैप मिलें तो रासायनिक नियंत्रण शुरू करें।

▸ रासायनिक नियंत्रण के लिए प्रोफेनोफॉस 50 प्रतिशत ईसी (400 मिली प्रति एकड़) या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 प्रतिशत एसजी (90-100 ग्राम प्रति एकड़) का 200 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

अमेरिकन और चितकबरी सूंडी

▸ **लक्षण:** अमेरिकन सुंडी डेन्डू में बड़ा छेद करके अपना आधा शरीर बाहर और आधा अंदर रखकर बीज खाती है। चितकबरी सुंडी शुरुआती दिनों में पौधों के ऊपरी कोमल तनों में छेद करती है, जिससे तने ऊपर से लटक कर सूख जाते हैं।

नियंत्रण: इनके लिए क्लोरेन्ट्रानिलिप्रोल 18.5 प्रतिशत एससी की 60 मिली मात्रा प्रति एकड़ छिड़कें।

कपास के प्रमुख रोग

जीवाणु झुलसा / कोणीय पर्ण दाग

▸ **लक्षण:** यह रोग पौधे के सभी ऊपरी भागों को प्रभावित करता है। पत्तियों पर छोटे, पानी के भीगे हुए कोणीय धब्बे बनते हैं, जो बाद में गहरे भूरे या काले हो जाते हैं। जब यह संक्रमण नसों के सहारे तने तक पहुंचता है तो तना काला होकर टूट जाता है जिसे ब्लैक आर्म अवस्था कहते हैं। गूलर पर भी काले धब्बे बनते हैं जिससे वे सड़ जाते हैं।

नियंत्रण ▸ बीज जनित होने के कारण बुवाई से पहले बीजोपचार जरूरी है। ▸ खड़ी फसल में लक्षण दिखने पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 प्रतिशत डब्ल्यूपी (500 ग्राम) के साथ स्ट्रेप्टोसाइक्लिन (6-12 ग्राम) को 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार 15 दिन बाद दोबारा दोहराएं।

जड़ गलन रोग

▸ **लक्षण:** यह खेत में पैच (टुकड़ों) के रूप में फैलता है। ग्रसित पौधा अचानक पूरी तरह से मुरझाकर सूख जाता है। जब ऐसे पौधे को उखाड़ा जाता है, तो उसकी मुख्य और द्वितीयक जड़ें पूरी तरह सड़ी हुई मिलती हैं और जड़ की छाल आसानी से छिलके की तरह हाथ में आ जाती है।

नियंत्रण ▸ यह पूरी तरह से मिट्टी जनित रोग है, इसलिए खड़ी फसल में दवा का छिड़काव काम नहीं करता।

▸ बचाव के लिए बुवाई के समय प्रति एकड़ 1 से 1.5 किलोग्राम ट्राइकोडर्मा विरिडी को 50 किलो अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर खेत में मिलाएं।

▸ शुरुआती लक्षण दिखने पर प्रभावित पौधों की जड़ों के पास कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यूपी (2 ग्राम प्रति लीटर पानी) का घोल बनाकर ड्रेन्चिंग (जड़ों में डालना) करें।

उकठा रोग

▸ **लक्षण:** इस रोग में पौधे की पत्तियां नीचे से ऊपर की ओर पीली पड़ने लगती हैं, किनारे सूखते हैं और पत्तियां गिर जाती हैं। यदि बीमार पौधे के तने को बीच से चीरकर देखा जाए तो अंदर की नसें कत्थई या काले रंग की दिखाई देती हैं।

नियंत्रण ▸ फसल चक्र अपनाएं (कपास के बाद अनाज वाली फसलें उगाएं) और खेत में जलभराव न होने दें। ट्राइकोडर्मा का उपयोग मिट्टी में जरूर करें।

पत्ती मरोड़ रोग

▸ **लक्षण:** यह एक भयानक विषाणु जनित रोग है। इसमें पत्तियों की नसें मोटी और हरी हो जाती हैं। पत्तियां कप के आकार में ऊपर या नीचे की तरफ मुड़ जाती हैं और उनका आकार छोटा रह जाता है। पौधे की बढ़त रुक जाती है और फूल एवं डेन्डू बहुत कम बनते हैं।

▸ **नियंत्रण:** चूंकि यह वायरस है, इसकी कोई सीधी दवा नहीं है। यह रोग सफेद मक्खी के कारण फैलता है, इसलिए सफेद मक्खी का कड़ाई से नियंत्रण करना ही इस रोग से बचने का एकमात्र उपाय है। होने पर एसिटामिप्रिड 20 प्रतिशत एसपी की 40-50 ग्राम मात्रा या डायफेन्थियूरॉन 50 प्रतिशत डब्ल्यूपी की 240 ग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें। जिस से सफेद माखी को कम कर सकते हैं एवं ग्रसित पौधों को शुरुआत में ही उखाड़कर खेत से दूर नष्ट कर दें।

कपास फसल के लिए जरूरी टिप्स

▸ **नाइट्रोजन (यूरिया) का सीमित उपयोग:** यूरिया का ज्यादा इस्तेमाल करने से पौधा बहुत कोमल और रसदार हो जाता है, जिससे रस चूसने वाले कीट और सूंडियां तेजी से आकर्षित होती हैं। हमेशा पोटाश और फास्फोरस का संतुलित उपयोग करें।

▸ **सफाई:** खेत के आसपास मौजूद खरपतवार को नष्ट कर दें, क्योंकि ये सफेद मक्खी और अन्य कीटों के आश्रय स्थल होते हैं।

▸ **दवाओं को बदल-बदल कर छिड़कें:** हर बार एक ही रासायनिक दवा का छिड़काव न करें। इससे कीटों में दवा के प्रति प्रतिरोधक क्षमता आ जाती है।

इलेक्ट्रॉनिक्स एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित हाइड्रोपोनिक्स

● डॉ. सी.के. सक्सेना ● डॉ. ए.एम. वाघाये
● डॉ. आर.डी. रंधे ● इंजी. आर.एस. ठाकुर
सिंचाई एवं जल निकास अभियांत्रिकी प्रभाग
आईसीएआर- केंद्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल (म.प्र.)

कृषि ने सहस्राब्दियों से मानव सभ्यता का पोषण किया है। तथापि, तीव्र शहरीकरण, कृषि योग्य भूमि के संकुचन, जलवायु परिवर्तन,जल संकट और बढ़ती वैश्विक खाद्य मांग ने पारंपरिक कृषि के समक्ष कई चुनौतियां उत्पन्न कर दी हैं।

हाइड्रोपोनिक्स- एक मृदा रहित कृषि पद्धतिके रूप में अत्यधिक व्यवहार्य विकल्प के रूप में उभरी है, जो न्यूनतम जल खपत और संवर्धित उत्पादकता के साथ उत्कृष्ट गुणवत्तापूर्ण उपज प्रदान करता है। वर्तमान में भारतीय राज्यों, विशेष रूप से महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, गुजरात और मध्य प्रदेश में हाइड्रोपोनिक अवसंरचना का तीव्र विस्तार हुआ है। आधुनिक हाइड्रोपोनिक्स की प्रभावकारिता अंतर्निहित रूप से पर्यावरणीय और पोषण संबंधी मापदंडों की सूक्ष्म निगरानी और विनियमन पर निर्भर करती है। सूचना प्रौद्योगिकी के साथ समन्वयित इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों- जैसे सेंसर, नियंत्रक (कंट्रोलर) और स्वचालन (ऑटोमेशन) प्रणालियों की तैनाती इन सुविधाओं के इष्टतम प्रबंधन को सक्षम बनाती है। यह लेख हाइड्रोपोनिक कृषि पर इलेक्ट्रॉनिक एकीकरण के परिवर्तनकारी प्रभाव को स्पष्ट करता है तथा इसके समकालीन अनुप्रयोगों और संभावित भावी प्रगति का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है।

हाइड्रोपोनिक्स- अवधारणाएं और आवश्यकताएं

हाइड्रोपोनिक्स एक मृदा रहित कृषि तकनीक है जिसमें पौधों का संवर्धन आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करने हेतु सावधानीपूर्वक तैयार किए गए जलीय घोल पर निर्भर करता है। जड़ प्रणालियां मिट्टी से पोषक तत्व ग्रहण करने के बजाय सीधे जल से घुले हुए खनिज आयनों को अवशोषित करती हैं। प्रणाली की संरचना यह निर्धारित करती है कि जड़ें लगातार जलमग्न रहेंगी, रुक-रुक कर नम की जाएंगी या वातित एवं आर्द्र वातावरण में निलंबित रहेंगी। इसके प्राथमिक विन्यासों में डीप वाटर कल्चर, न्यूट्रिएंट फिल्म तकनीक, ड्रिप सिंचाई, एब एंड फ्लोस विक सिस्टम और एयरोपोनिक्स आदि प्रमुख हैं। इन प्रणालियों द्वारा विभिन्न पोषक तत्वों का समान वितरणस जल का कुशल उपयोगस त्वरित विकास दरस उच्च उपजस तथा खरपतवार प्रसार एवं मृदा जनित रोगजनकों का उन्मूलनआदि साझा लाभ होते हैं। हाइड्रोपोनिक्स शहरी कृषिस वर्टिकल फार्मिंग, संरक्षित खेती और ऊसर या लवनीय मृदा प्रोफाइल वाले क्षेत्रों के लिए असाधारण रूप से उपयुक्त है।

इलेक्ट्रॉनिक सेंसर- आधारित आधुनिक हाइड्रोपोनिक्स

पारंपरिक कृषि के विपरीत, हाइड्रोपोनिक्स में महत्वपूर्ण मापदंडों की निरंतर निगरानी की आवश्यकता होती है। पीएच, विद्युत चालकता, घुलित ऑक्सीजन, तापमान, सापेक्ष आर्द्रता या प्रकाश की तीव्रता में मामूली विचलन पौधों के विकास (मॉर्फेजेनेसिस) और अंतिम फसल उपज को गहराई से प्रभावित कर सकता है। चूंकि मानवीय निगरानी श्रमसाध्य एवं अक्सर अपर्याप्त होती है, इसलिए इलेक्ट्रॉनिक्स द्वारा समयबद्ध सुधारात्मक हस्तक्षेप सुनिश्चित करने हेतु स्वचालित निर्णय लेने की सुविधा प्रदान करते हैं। सेंसर अनुभवजन्य मेट्रिक्स प्राप्त करते हैं, नियंत्रक इस जानकारी को संसाधित करते हैं और एक्ट्यूएटर आवश्यक पंप, वाल्व, एरेटर या प्रकाश व्यवस्था को संचालित करते हैं। यह क्लोज-लूप प्रतिमान जलए पोषक तत्व और ऊर्जा व्यय को कम करते हुए उत्पादकता को बढ़ाता है।

सेंसर स्वचालित सुविधाओं के संवेदी तंत्र के रूप में कार्य करते हैं, जो पौधों के विकास (ऑन्टोजेनी) को निर्धारित करने वाले पारिस्थितिक और पोषण संबंधी चरों की निरंतर मात्रा निर्धारित करते हैं। प्रमुख उपकरणों में तापमान, सापेक्ष आर्द्रता, पीएच, ईसी, कुल घुलित ठोस, घुलित आक्सीजन, जल स्तर, प्रवाह (फ्लो), कार्बन डाइऑक्साइड और प्रकाश के सेंसर के साथ-साथ इमेजिंग सेंसर और ऑप्टिकल कैमरे शामिल हैं। प्रत्येक सेंसर सूक्ष्म फसल प्रबंधन के लिए आवश्यक अनुभवजन्य डेटा प्रदान करने हेतु विशिष्ट भौतिक सिद्धांतों पर कार्य करता है।

नियंत्रक एवं इलेक्ट्रॉनिक हार्डवेयर

प्रणाली स्वचालन प्राप्त करने के लिए सेंसरों को पूर्व-क्रमादेशित तार्किक निर्णयों को निष्पादित करने में सक्षम इलेक्ट्रॉनिक नियंत्रकों की आवश्यकता होती है। प्रणालीगत जटिलता के आधार पर नियंत्रक प्राथमिक टाइमर (क्रोनोमीटर) से लेकर परिष्कृत प्रोग्रैमेबल लॉजिक कंट्रोलर, माइक्रोकंट्रोलर, कंप्यूटेशनल यूनिट या औद्योगिक-ग्रेड स्वचालन आर्किटेक्चर तक विस्तृत होते हैं। ये उपकरण रिले सोलेनोइड वाल्व, डोजिंग पंप, एरेटर, जलवायु नियंत्रण तंत्र और एलईडी ल्यूमिनेयर के साथ निर्बाध रूप से इंटरफेस करते हैं। इसके अलावा वे डेटा लॉगिंग, स्वचालित अलार्म जनरेशन और संगणनाओं के द्वारा दूरस्थ परिचालन निगरानी की सुविधा प्रदान करते हैं।

नियंत्रित-पर्यावरण (इनडोर) हाइड्रोपोनिक प्रतिष्ठान प्रकाश व्यवस्था, हाइड्रोलिक्स और जलवायु नियमन के लिए विद्युत ऊर्जा पर निर्भर करते हैं। इलेक्ट्रॉनिक्स प्रकाश व्यवस्था को मॉड्यूलेट करकेए एक्ट्यूएटर संचालन को विनियमित करके, वातन (एरेशन) को अनुकूलित करके, और सौर फोटोवोल्टिक्स जैसे नवीकरणीय ऊर्जा इनपुट को एकीकृत करके ऊर्जा दक्षता में महत्वपूर्ण वृद्धि करते हैं। प्रोग्रामेबल स्पेक्ट्रल आउटपुट के साथ समकालीन एलईडी कॉन्फिगरेशन प्रकाश संश्लेषक प्रभावकारिता को अधिकतम करते हुए ऊर्जा की खपत को और कम करते हैं।

हाइड्रोपोनिक्स में स्वचालन (ऑटोमेशन)

स्वचालन हाइड्रोपोनिक्स में इलेक्ट्रॉनिक्स के सर्वोच्च योगदान का प्रतिनिधित्व करता है। स्वचालित डोजिंग प्रणालियां निर्धारित ईसी थ्रेशोल्ड को बनाए रखते हुए जड़ क्षेत्रों में पोषक तत्वों के फॉर्मूलेशन को गतिशील रूप से प्रसारित करती हैं। इसी तरह पीएच नियंत्रक इष्टतम पीएच बैंडविड्थ बनाए रखने के लिए आवश्यक अम्लीय या क्षारीय अभिकर्मकों को इंजेक्ट करते हैं। इलेक्ट्रॉनिक नियंत्रक व्यवस्थित रूप से जलीय वातन, सिंचाई आवधिकता, प्रकाश व्यवस्था के कार्यक्रम, परिवेशी जलवायु और कार्बन डाईआक्साइड की सांद्रता को नियंत्रित करते हैं। यह व्यापक स्वचालन इष्टतम फसल विकास को सुलभ करता है जबकि शारीरिक श्रम की आवश्यकताओं और परिचालन व्यय को काफी हद तक कम करता है।

स्मार्ट हाइड्रोपोनिक्स में इंटरनेट ऑफथिंग्स और कृत्रिम बुद्धिमत्ता

वायरलेस संचार में हुई प्रगति ने हाइड्रोपोनिक्स को इंटरनेट ऑफ थिंग्स सक्षम विषय में परिवर्तित कर दिया है। वायरलेस सेंसर वाई.फाई, जीएसएम या लोरा नेटवर्क के माध्यम से क्लाउड अवसंरचनाओं में अनुभवजन्य डेटा प्रसारित करते हैं जिससे कृषक दूर से ही वास्तविक समय में फसल की स्थिति की निगरानी करने में सशक्त होते हैं।

एलओटी प्लेटफॉर्म ग्राफिकल डैशबोर्ड, स्वचालित अलर्ट, ऐतिहासिक विश्लेषण और पूर्वानुमानित एल्गोरिदम सिफारिशें प्रदान करते हैं। ऐसी उन्नत प्रणालियां कृषक की सुविधा से भौगोलिक निकटता की परवाह किए बिना समयबद्ध हस्तक्षेप की सुविधा प्रदान करती हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता स्वायत्त कृषि के लिए अभूतपूर्व संभावनाओं के द्वार खोलती है। कंप्यूटर विजन प्रणालियां प्रारंभिक अवस्था में पोषक तत्वों की कमी, रोग संबंधी व्याधियों, कीटों के संक्रमण और रूपात्मक विसंगतियों का पता लगाने के लिए वानस्पतिक छवियों की बारीकी से जांच करती हैं। मशीन लर्निंग एल्गोरिदम विकास पथों का पूर्वानुमान लगाते हैं, हाइड्रोलिक गतिशीलता को अनुकूलित करते हैं, फसल कटाई की समय-सीमा का अनुमान लगाते हैं और ऐतिहासिक डेटा रिपॉजिटरी के आधार पर पोषक तत्व प्रोटोकॉल तैयार करते हैं। एआई संचालित निर्णय समर्थन तंत्र (आर्किटेक्चर) अनिवार्य रूप से नियंत्रित-पर्यावरण कृषि के अपरिहार्य घटक बन जाएंगे।

भारत लागत- प्रभावी, स्वदेशी हाइड्रोपोनिक तकनीकों के विकास की अपार संभावनाएं रखता है। वर्तमान में वाणिज्यिक स्वचालन उपकरणों का एक बड़ा हिस्सा आयात किया जाता है, जिससे यह छोटे पैमाने के कृषकों के लिए अत्यधिक महंगा हो जाता है। सेंसर, डोजिंग उपकरणों, एलओटी नियंत्रकों और निर्णय समर्थन प्रणालियों का घरेलू निर्माण ढांचागत लागत को काफी कम कर सकता है, साथ ही स्थानीय जलवायु प्रतिमानों के प्रति प्रणालीगत अनुकूलन क्षमता को भी बढ़ा सकता है। अनुसंधान संस्थानों, शैक्षणिक संस्थाओं, स्टार्ट-अप्स और कॉर्पोरेट क्षेत्र के बीच अंत:विषय सहयोग इस डोमेन के भीतर नवाचार को महत्वपूर्ण रूप से गति प्रदान करेगा।

हाइड्रोपोनिक्स का भविष्य का प्रक्षेपवक्र एआई, रोबोटिक्स, क्लाउड कंप्यूटिंग, डिजिटल ट्विन्स, ब्लॉकचेन अवसंरचनाओं और एज कंप्यूटिंग के साथ इलेक्ट्रॉनिक्स के अभिसरण से जुड़ा हुआ है। स्व-निगरानी और स्व-नियमन दक्षता से संपन्न स्वायत्त फार्म (खेत) तेजी से सर्वव्यापी हो जाएंगे। निकट भविष्य में मशीन विजन, रोबोटिक कटाई (हार्वेस्टिंग), ड्रोन-सहायता प्राप्त निगरानी और पूर्वानुमानित विश्लेषण कृषि उत्पादकता और पारिस्थितिक स्थिरता को और बढ़ाएंगे।

आमतौर पर यह सलाह दी जाती है कि नौसिखि कृषकों को व्यावहारिक आधारभूत विशेषज्ञता प्राप्त करने हेतु प्रारंभिक संचालन मैनुअल प्रणालियों के साथ शुरू करना चाहिए। तत्पश्चात पूर्णत: स्वचालित प्रणालियों में पूंजी निवेश करने से पूर्व उन्हें मूलभूत प्राचलों (जैसे- पीएच, ईसी, तापमान) की निगरानी के लिए विश्वसनीय संवेदन उपकरणों को एकीकृत करना चाहिए। नियमित सेंसर अंशांकन (कैलिब्रेशन), निवारक रखरखाव नियम और सूक्ष्म डेटा लॉगिंग परिचालन निष्ठा और दीर्घकालिक प्रणालीगत विश्वसनीयता के लिए अनिवार्य हैं। इलेक्ट्रॉनिक्स के एकीकरण ने स्पष्ट रूप से हाइड्रोपोनिक्स को एक पर्यवेक्षित कार्यप्रणाली से एक बुद्धिमान, स्वचालित और अत्यधिक कुशल उत्पादन पारिस्थितिकी तंत्र में बदल दिया है। निर्बाध निगरानी, सेंसर-संचालित नियंत्रण, एलओटी कनेक्टिविटी, और एआई संचालित संज्ञानात्मक पर्यवेक्षण सामूहिक रूप से संसाधन-उपयोग दक्षता, फसल उपज और परिचालन निर्भरता में सुधार को उत्प्रेरित करते हैं। जैसे-जैसे इलेक्ट्रॉनिक प्रतिमान विकसित होते रहेंगे, हाइड्रोपोनिक्स टिकाऊ खाद्य उत्पादन, शहरी कृषि पहल और जलवायु-अनुकूल कृषि प्रणालियों में एक सर्वोत्कृष्ट भूमिका निभाएगा।

फल उत्पादन का महत्व

वर्तमान चुनौतियां एवं उन्नत उत्पादन तकनीकों की आवश्यकता

- डॉ. रंजीत सिंह
- डॉ. राजेंद्र पटेल
- ब्रजेश नामदेव

कृषि विज्ञान केंद्र, गोविंदनगर, नर्मदापुरम (म.प्र.)

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ लगभग आधी से अधिक जनसंख्या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि एवं उससे जुड़े व्यवसायों पर निर्भर है। कृषि के साथ-साथ बागवानी का महत्व भी निरंतर बढ़ रहा है।

बागवानी के अंतर्गत फल, सब्जियां, फूल, मसाले, औषधीय एवं सुगंधित पौधों की खेती की जाती है। इनमें फल फसलें आर्थिक, पोषणीय तथा औद्योगिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

फल मानव आहार का एक अनिवार्य भाग हैं। इनमें विटामिन, खनिज लवण, प्राकृतिक शर्करा, कार्बोहाइड्रेट, आहार रेशा (फाइबर), एंटीऑक्सीडेंट तथा अन्य आवश्यक पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। नियमित फल सेवन से शरीर को ऊर्जा प्राप्त होती है, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, पाचन तंत्र स्वस्थ रहता है तथा कुपोषण एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी से होने वाले रोगों की संभावना कम होती है।

भारत विश्व के प्रमुख फल उत्पादक देशों में से एक है। यहां आम, केला, अमरूद, पपीता, संतरा, मौसंबी, नींबू, अनार, अंगूर, लीची, सेब, कटहल, बेर तथा चीकू जैसे अनेक फलों का बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाता है। देश की विविध जलवायु एवं उपजाऊ भूमि के कारण उष्णकटिबंधीय, उपोष्णकटिबंधीय तथा समशीतोष्ण तीनों प्रकार के फलों की सफल खेती संभव है।

बढ़ती जनसंख्या, पोषण सुरक्षा की आवश्यकता, जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों का सीमित होना तथा गुणवत्तापूर्ण फलों की बढ़ती मांग को देखते हुए फल उत्पादन में आधुनिक एवं वैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग अत्यंत आवश्यक हो गया है। उन्नत उत्पादन तकनीकों के माध्यम से कम लागत में अधिक उत्पादन, बेहतर गुणवत्ता तथा अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

फल उत्पादन का महत्व

फल उत्पादन का महत्व केवल पोषण तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका आर्थिक, सामाजिक, पर्यावरणीय तथा औद्योगिक महत्व भी अत्यधिक है।

- **पोषण की दृष्टि से महत्व:** फल विटामिन ए, बी, सी, ई एवं के, कैल्शियम, फॉस्फोरस, आयरन, पोटैशियम तथा अन्य सूक्ष्म पोषक तत्वों के प्रमुख स्रोत हैं। इनके नियमित सेवन से कुपोषण, एनीमिया तथा विटामिन की कमी से होने वाले रोगों की संभावना कम होती है। फलों में उपस्थित एंटीऑक्सीडेंट शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को सुदृढ़ बनाते हैं।
- **आर्थिक महत्व:** फल फसलें किसानों को अन्य परंपरागत फसलों की तुलना में अधिक लाभ प्रदान करती हैं। गुणवत्तापूर्ण फलों की घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अच्छी मांग होने के कारण किसानों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।
- **रोजगार सृजन:** फल उत्पादन से पौधशालाओं (नर्सरी), फल प्रसंस्करण, पैकेजिंग, भंडारण, परिवहन तथा विपणन जैसे क्षेत्रों में वर्षभर रोजगार के अवसर उपलब्ध होते हैं।
- **कृषि आधारित उद्योगों के लिए कच्चा माल:** फल प्रसंस्करण उद्योगों में जैम, जेली, जूस, स्क्वैश, कैंडी, मुरब्बा, अचार तथा सूखे फल जैसे अनेक मूल्यवर्धित उत्पाद तैयार किए जाते हैं, जिससे कृषि आधारित उद्योगों को बढ़ावा मिलता है।
- **निर्यात में योगदान:** भारत से आम, अंगूर, अनार, केला तथा अन्य फल अनेक देशों में निर्यात किए जाते हैं। इससे विदेशी मुद्रा अर्जित होती है तथा देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है।
- **भारत में उत्पादित प्रमुख फल:** आम, केला, अमरूद, पपीता, संतरा, मौसंबी, नींबू, अनार, अंगूर, लीची, सेब, कटहल, बेर और चीकू।

वर्तमान चुनौतियां एवं उन्नत उत्पादन तकनीकों की आवश्यकता

वर्तमान समय में फल उत्पादन अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिनमें प्रमुख हैं-

- जलवायु परिवर्तन
- अनियमित एवं असंतुलित वर्षा
- सिंचाई जल की कमी
- भूमि की उर्वरता में गिरावट
- कीट एवं रोगों का बढ़ता प्रकोप
- उत्पादन लागत में निरंतर वृद्धि
- गुणवत्तापूर्ण फलों की बढ़ती बाजार मांग

इन चुनौतियों से निपटने तथा उत्पादकता एवं गुणवत्ता बढ़ाने के लिए आधुनिक एवं वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाना समय की आवश्यकता है।

- **उन्नत उत्पादन तकनीकें:** फल उत्पादन को अधिक लाभकारी एवं टिकाऊ बनाने के लिए निम्नलिखित आधुनिक तकनीकों का उपयोग किया जाना चाहिए।
- उच्च गुणवत्ता वाली उन्नत किस्मों का चयन।
- प्रमाणित एवं रोगमुक्त पौधों का उपयोग।
- ड्रिप सिंचाई एवं फर्टिगेशन।
- मल्चिंग तकनीक।
- उच्च घनत्व रोपण।
- समेकित पोषक तत्व प्रबंधन ।
- समेकित कीट एवं रोग प्रबंधन।
- जैविक एवं प्राकृतिक कृषि पद्धतियां।
- आधुनिक कटाई उपरांत प्रबंधन

इन तकनीकों के उपयोग से उत्पादन एवं गुणवत्ता दोनों में वृद्धि होती है, संसाधनों की बचत होती है तथा पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिलता है।

निष्कर्ष: प्रमुख फल फसलों के लिए उन्नत उत्पादन तकनीकों का प्रशिक्षण वर्तमान समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर किसान कम लागत में अधिक एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं तथा अपनी आय में उल्लेखनीय वृद्धि कर सकते हैं।

वैज्ञानिक बागवानी न केवल किसानों की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाती है, बल्कि पोषण सुरक्षा, रोजगार सृजन, कृषि आधारित उद्योगों के विकास, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा ग्रामीण विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। अतः प्रत्येक फल उत्पादक किसान, कृषि विद्यार्थी तथा उद्यानिकी से जुड़े व्यक्तियों को समय-समय पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेकर नवीनतम तकनीकों को अपनाना चाहिए, ताकि फल उत्पादन को अधिक लाभकारी, टिकाऊ एवं प्रतिस्पर्धी बनाया जा सके।

स्वराज ने मध्य प्रदेश में लॉन्च किया नया प्रोटेक ट्रैक्टर

स्वराज 855FE प्रोटेक नौ आधुनिक तकनीक से लैस जो किसानों को देगा अधिक उत्पादकता

इंदौर। महिंद्रा समूह की कंपनी और भारत के प्रमुख ट्रैक्टर ब्रांडों में शामिल स्वराज ट्रैक्टर्स ने मध्य प्रदेश में अपना नया स्वराज-855FE प्रोटेक ट्रैक्टर लॉन्च किया। इस अवसर पर महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड के स्वराज डिवीजन के सीईओ **गगनजोत सिंह, आलोक गुप्ता** नेशनल सेल्स हेड, **प्रदीप कुलकर्णी** जोनल हेड, **जसजीत सिंह बावा** मार्केटिंग हेड, **धर्मेंद्र वशिष्ठ** जोनल हेड गुजरात, **अवधेश सिंघल** स्टेट हेड एमपी, **सुधीर चौरसिया** स्टेट हेड छग एवं कंपनी के अन्य कर्मचारी उपस्थित थे।

इस दौरान महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड के स्वराज डिवीजन के सीईओ गगनजोत सिंह ने कहा कि स्वराज प्रोटेक को दमदार प्रदर्शन, सटीक इंजीनियरिंग और आसान संचालन को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है, ताकि कृषि हो या व्यावसायिक कार्य, हर काम कम समय, कम मेहनत और अधिक दक्षता के साथ पूरा किया जा सके। इसमें भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखकर विकसित की गई आधुनिक तकनीक और कई उन्नत फीचर्स दिए गए हैं, जो कठिन से कठिन कार्यों को भी आसानी से पूरा करने में मदद करते हैं।

उन्होंने कहा कि स्वराज 855 प्रोटेक 2 डब्ल्यूडी और 4डब्ल्यूडी दोनों विकल्पों में उपलब्ध है। यह ट्रैक्टर स्वराज की पहचान रहे दमदार प्रदर्शन, बहुउपयोगिता और विश्वसनीयता को और बेहतर बनाता है। इसके साथ नए आरामदायक फीचर्स, आकर्षक डिजाइन और अत्याधुनिक टेलीमैटिक्स सिस्टम दिया गया है, जो ग्राहकों को ट्रैक्टर से जुड़ी लाइव जानकारी उपलब्ध कराता है। बेहतर प्रदर्शन के साथ यह नया ट्रैक्टर किसानों और व्यावसायिक उपयोगकर्ताओं को अधिक उत्पादकता, बेहतर दक्षता, ज्यादा आराम और आधुनिक स्टाइल प्रदान करेगा। श्री सिंह ने कहा कि खेती का भविष्य ऐसी तकनीक पर आधारित है जो किसानों की वास्तविक जरूरतों के अनुरूप, भरोसेमंद और उपयोगी हो। प्रोटेक इसी सोच का परिणाम है। यह किसानों को अधिक सटीकता, बेहतर उत्पादकता और आसानी से काम करने में सक्षम बनाता है। मध्य प्रदेश में इसका लॉन्च विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह देश का सबसे बड़ा सोयाबीन उत्पादक और गेहूं व चना उत्पादन में दूसरा सबसे बड़ा राज्य है। यहां की प्रमुख सोयाबीन-गेहूं-चना फसल प्रणाली के लिए 40-50 हॉर्सपावर श्रेणी के ट्रैक्टर सबसे उपयुक्त हैं।

बेहतर प्रदर्शन और भरोसेमंद क्षमता स्वराज 855 प्रोटेक को कठिन कृषि कार्यों को अधिक आत्मविश्वास और दक्षता के साथ पूरा करने के लिए विकसित किया गया है। इसमें फुली कॉन्स्टेंट-मेश मल्टी-स्पीड ट्रांसमिशन दिया गया है, जिससे गियर आसानी से बदलते हैं और गियरबॉक्स की उम्र भी बढ़ती है। 12 फॉरवर्ड और 3 रिवर्स स्पीड विकल्पों के साथ किसान खेत की स्थिति और कृषि उपकरण के अनुसार उपयुक्त गति चुन सकते हैं, जिससे उत्पादकता बढ़ती है। इसका पावर-सेंस लिफ्ट 2,500 किलोग्राम की श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ लिफ्टिंग क्षमता प्रदान करता है, जिससे भारी कृषि उपकरणों को आसानी से उठाया और संचालित किया जा सकता है। ट्रैक्टर में ड्यूरा-मार्ट्स सेरामेटेलिक क्लच और ड्यूरा-टफ एक्सल जैसी आधुनिक इंजीनियरिंग तकनीक दी गई है, जो लंबे समय तक टिकाऊ प्रदर्शन, आसान संचालन और कठिन परिस्थितियों में भी बेहतर विश्वसनीयता सुनिश्चित करती है।

स्वराज 855FE अब PRO-TEK की स्मार्ट टेक्नालॉजी के साथ उपलब्ध

स्वराज 855 FE में प्रयुक्त की गई PRO-TEK तकनीक सटीक इंजीनियरिंग एवं पावरफुल परफार्मेंस से सारे कार्यों को आसान बनाती है। स्वराज PRO-TEK में ऐसी अनेकों खूबियां हैं जो ट्रेक्टर को अधिकतम उत्पादकता के लिये तैयार रखती है। खेती के सभी कार्यों के साथ ही व्यावसायिक कार्यों को भी करने में यह तकनीक अव्वल है।

स्वराज 855FE में PRO-TEK टेक्नोलॉजी से बेस्ट-इन-क्लास लिफ्ट कैपासिटी से लेकर सेरामेटालिक क्लच प्लेट्स और अत्याधुनिक मल्टीस्पीड PTO आप्शन उपलब्ध है जो अधिकतम उत्पादकता के साथ प्रगति की राह आसान बनाता है। इसमें प्रयुक्त किया गया **पावर सेंस लिफ्ट, हायर हायड्रोलिक फ्लो, ड्यूरा मैक्स क्लच, FCM ट्रांसमिशन, हायर ट्रांसपोर्ट हाइट, डिफ्रेन्शियल लाक, ड्यूरा टफ एक्सल, बैलेन्सड पावर स्टेरिंग, हायर फ्यूल टैंक एवं मैकेनिकल टॉगल ट्रैक्टर की प्रमुख विशेषता है। इसके अलावा स्टायलिश लीवर्स, नया वर्डमार्क, डिजिटल क्लस्टर, मेटेलिक कलर, क्रोम डिकेल्स, वर्क डिस्ट्री एवं सुरक्षा अलर्ट्स ट्रैक्टर को खास बनाते हैं।**

स्वराज ट्रैक्टर की कहानी-किसानों की जुबानी

स्वराज 855FE का वादा कम लागत अधिक मुनाफा

नर्मदापुरम। श्री प्रकाश वर्मा ग्राम बडोनिया कला तह. जिला नर्मदापुरम (म.प्र.) के किसान का कहना हैकि स्वराज 855FE PRO-TEK ट्रैक्टर मजबूत बॉडी, दमदार इंजिन एवं नई टेक्नोलॉजी के साथ है जो ज्यादा पावर और बेमिसाल कम्फर्ट और कम डीजल खपत में अधिक कार्य करने की क्षमता वाला ट्रैक्टर है। यह ट्रैक्टर कृषि के सारे कार्य करने में सफल है। हमारे यहां पर काली मिट्टी वाली जमीन है जिस पर यह ट्रैक्टर सारे काम बहुत ही आसानी से करता है। गहरी जुताई वाले काम भी सरलता से करता है। इस ट्रैक्टर की विशेषता है कि आप कितना भी चलाओ कभी थकान नहीं होती। कृषि के सारे उपकरणों के साथअन्य काम बड़ी आसानी से करता है। जैसे- रोटावेटर, कल्टीवेटर, डिस्क हेरो ट्रॉली, थ्रेसर, ढुलाई के कामों में भी यह सबसे बढ़िया काम करता है। स्वराज ट्रैक्टर कम समय में अधिक काम करता है। नया स्वराज जोश का बादशाह है। खेती में कम लागत में यह ट्रैक्टर अधिक फायदा देता है। स्वराज में हमारे हिसाब से वे सभी गुण हैं जिनकी हमें आवश्यकता है। एक ही ट्रैक्टर में सारे गुण सम्पन्न हैं।

स्वराज 855FE PRO-TEK ताकत और तकनीक का बादशाह

नर्मदापुरम। श्री कुलदीप सोलंकी ग्राम सनखेड़ा, तहसील-इटारसी जिला नर्मदापुरम (म.प्र.) का कहना है कि स्वराज 855FE PRO-TEK ताकत एवं तकनीक का बादशाह है। यह ट्रैक्टर कृषि के सारे काम करने में सक्षम है। कृषि के अलावा अन्य कार्य भी बहुत कुशलता से करता है। हमारे यहां पर धान की खेती होती है। स्वराज मचाई में रोटावेटर एवं प्लाऊ में बहुत ही शानदार काम करता है। इस ट्रैक्टर में डीजल की खपत भी कम होती है जिसके कारण समय पर सभी काम हो जाते हैं। इसी वजह से हमें कम लागत में अधिक उपज मिलती है। इस ट्रैक्टर का हाइड्रोलिक सिस्टम जबर्दस्त है जिससे भारी से भारी काम आसानी से हो जाता है। यह ट्रैक्टर भारी कृषि उपकरणों के साथ बड़ी आसानी से काम करता है। जैसे- कल्टीवेटर, डिस्क हेरो ट्रॉली, थ्रेसर, ढुलाई के कामों में भी यह सबसे बढ़िया काम करता है। इस ट्रैक्टर में ज्यादा देर तक कार्य करने पर भी चालक को थकान महसूस नहीं होती है। श्री कुलदीप सोलंकी ने बताया कि स्वराज कंपनी के तीन ट्रैक्टर मेरे पास पहले से है। यह चौथा ट्रैक्टर मैंने लिया है। इस कंपनी के ट्रैक्टर बहुत शानदार हैं। किसानों के लिये स्वराज ट्रैक्टर कमाऊ पूत है।

आधुनिक कृषि यंत्रीकरण, ACE ट्रैक्टर तकनीक, सर्विस और एक्सचेंज सर्व सुविधा युक्त : श्री खनेजा

अलवर के बूढ़ी बावल में ACE की मेगा कस्टमर मीट, 2100 से अधिक किसानों ने लिया भाग

अलवर। किसानों के साथ सीधा संवाद स्थापित करने, आधुनिक कृषि यंत्रीकरण की जानकारी उपलब्ध कराने और ACE ट्रैक्टर्स के प्रति किसानों का विश्वास मजबूत करने के उद्देश्य से एक्शन कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट लिमिटेड (ACE) द्वारा बूढ़ी बावल, अलवर में मेगा कस्टमर मीट का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में 2100 से अधिक किसानों एवं ग्राहकों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में ACE के सीजीएम एवं महाप्रबंधक (कृषि व्यापार इकाई) श्री रविंद्र सिंह खनेजा, सर्विस हेड हरीश अग्रे, रिटेल हेड शैलेंद्र सिंह तथा ट्रैक्टर ट्रेनिंग एवं एक्सचेंज प्रमुख मनीष दीक्षित उपस्थित रहे। कंपनी के वरिष्ठ अधिकारियों ने किसानों से सीधे संवाद कर उनकी कृषि आवश्यकताओं, ट्रैक्टर उपयोग, सर्विस और भविष्य की जरूरतों को समझा तथा ACE के विभिन्न ट्रैक्टर मॉडल और उनकी तकनीकी विशेषताओं की जानकारी दी। मेगा कस्टमर मीट में किसानों को ट्रैक्टर की मजबूती, आधुनिक तकनीक, बेहतर प्रदर्शन और विभिन्न कृषि कार्यों में उपयोगिता के बारे में बताया गया। साथ ही किसानों को उनकी भूमि और खेती के प्रकार के अनुसार उपयुक्त ट्रैक्टर मॉडल के चयन के संबंध में मार्गदर्शन दिया गया।

कार्यक्रम के दौरान सर्विस, स्पेयर पार्ट्स, नियमित रखरखाव और पुराने ट्रैक्टर के एक्सचेंज से जुड़ी सुविधाओं की भी जानकारी दी गई। सर्विस हेड हरीश अग्रे ने ट्रैक्टर की समय पर सर्विस, इंजन ऑयल एवं फिल्टर की जांच तथा कूलिंग सिस्टम के उचित रखरखाव पर जोर दिया। वहीं मनीष दीक्षित ने ट्रैक्टर के सही उपयोग, प्रमुख फीचर्स और एक्सचेंज सुविधा के बारे में किसानों को जानकारी दी।

इस अवसर पर श्री खनेजा ने कहा कि ACE का उद्देश्य केवल ट्रैक्टर बेचना नहीं, बल्कि किसानों के साथ दीर्घकालिक विश्वास और मजबूत संबंध स्थापित करना है। उन्होंने कहा कि किसानों की बदलती जरूरतों को ध्यान में रखते हुए कंपनी आधुनिक तकनीक, विश्वसनीय ट्रैक्टर और बेहतर बिक्री-पश्चात सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए निरंतर प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा, किसान हमारी प्राथमिकता हैं और उनकी सफलता ही ACE की सफलता है। कार्यक्रम में किसानों ने कंपनी के अधिकारियों से ट्रैक्टरों की तकनीकी विशेषताओं, प्रदर्शन, सर्विस और एक्सचेंज को लेकर सवाल किए। 2100 से अधिक किसानों की भागीदारी ने क्षेत्र में ACE के प्रति बढ़ते विश्वास और स्वीकार्यता को प्रदर्शित किया।

टैग स्टेम-ली धान का सबसे सुरक्षित दानेदार कीटनाशक

भारत का पहला पेटेन्टेड कीटनाशक

इंदौर। देश की प्रमुख जैविक उत्पादक कंपनी ट्रॉपिकल एग्रो सिस्टम (इं.) प्रायवेट लिमिटेड ने धान उत्पादक किसानों के लिये सबसे सुरक्षित दानेदार कीटनाशक टैग स्टेम-ली लांच किया है।

यह कंपनी का पेटेन्टेड उत्पाद एवं देश का पहला तीन तत्वों वाला दानेदार कीटनाशक है। टैग स्टेम-ली धान में लगने वाले तना छेदक और पत्ता लपेटक कीट पर तुरंत असर करता है। इसकी वजह से धान की सुरक्षा लंबे समय तक होती है। ट्रॉपिकल एग्रो सिस्टम के रीजनल मैनेजर (सेन्ट्रल एम.पी.) श्री बी.के. तिवारी ने बताया कि धान की फसल में टैग स्टेम-ली से डेड हार्ट और सफेद बालियों से पूरी तरह छुटकारा मिलता है। इसका असर खरीफ और रबी दोनों मौसम की फसलों पर रहता है। ट्रॉपिकल के टैग स्टेम-ली का प्रयोग 2 किलोग्राम प्रति एकड़ खाद अथवा रेत के साथ मिलाकर करना अनुशंसित है। इसके दोहरे नियंत्रण से दो बड़े कीट तना छेदक एवं पत्ती लपेटक पर प्रभावी वार करता है। तीन सक्रिय घटक फार्मूला वाला टैग स्टेम-ली धान की फसल के लिये सबसे शक्तिशाली समाधान है। इसके माध्यम से धान की फसल को पूरी तरह सुरक्षित रखा जा सकता है। मध्यप्रदेश स्थित ट्रॉपिकल एग्रो के समस्त अधिकृत विक्रेताओं के पास यह उत्पाद उपलब्ध है। टैग स्टेम-ली को लांच करने के पूर्व गहन अनुसंधान किया गया है। ट्रॉपिकल एग्रो ने इसे विशेष रूप से पेटेन्टेड करवाया है।

सिजेंटा का फ्युजिफ्लेक्स करे खरपतवारों का जड़ से खात्मा

इंदौर। प्रतिष्ठित कंपनी सिंजेंटा इंडिया लि. का खरपतवारनाशी उत्पाद फ्युजिफ्लेक्स पिछले एक दशक से किसानों का भरोसा जीतकर हर सीजन में खरा उतरा है। फ्युजिफ्लेक्स चौड़ी और संकरी पत्ती वाले दोनों प्रकार के खरपतवारों पर न केवल तेजी से नियंत्रण करता है बल्कि फसल को भी फुर्ती से बढ़ाता है। कंपनी के डिवीजनल मार्केटिंग मैनेजर श्री सचिन उपाध्याय ने बताया कि खरीफ में सोयाबीन और मूंगफली की फसल में चौड़ी और संकरी पत्ती वाले खरपतवारों पर फ्युजिफ्लेक्स प्रभावी नियंत्रण करता है। यह 3-4 घंटे में ही खरपतवार की बढ़वार को रोकता है और एक-दो दिन में ही खरपतवार के खत्म होने के लक्षण दिखाई देते हैं। तेज गति से खरपतवार का नियंत्रण होता है। फ्युजिफ्लेक्स के छिड़काव के बाद फसल की वृद्धि नहीं रूकती है और फसल फुर्तीली हो जाती है। फसल भी स्वस्थ और हरी भरी रहती है। श्री उपाध्याय ने बताया कि फ्युजिफ्लेक्स चौड़ी और संकरी पत्ती वाले सभी खरपतवारों को नियंत्रित करता है। यह डिगेरा अर्वेंसिस, एकिनोक्लोआ कोलोना, ट्रायंथेमा एसपीपी, डिजिटारिया एसपीपी, पिलैंथस निरूरी, एकालिफा इंडिका, एल्युइसिन इंडिका, ब्रैंकारिया रैप्टन्स, डैक्टिलोक्टेनियम इजिप्टिकम, कमेलिना बेंघालेंसिस नामक खरपतवारों का शीघ्रता से खात्मा करता है। खरपतवारों की 3-4 पत्ती अवस्था अर्थात 12-18 दिन की फसल पर फ्युजिफ्लेक्स का प्रयोग करना चाहिये। इसकी 400 मिली लीटर मात्र प्रति एकड़ 200 लीटर पानी के साथ अनुशंसित की गई है। प्रयोग के समय और उसके बाद मिट्टी में नमी होना जरूरी है। ध्यान रहे फूल आने से पहले इसका उपयोग करना चाहिये।

लोक कल्याण भूमिका समिति को राष्ट्रीय सीएसआर अवॉर्ड

नई दिल्ली। सामाजिक विकास और ग्रामीण सशक्तिकरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए जबलपुर की लोक कल्याण भूमिका समिति को प्रतिष्ठित नेशनल सीएसआर अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। यह सम्मान नेशनल सीएसआर टाइम्स द्वारा आयोजित राष्ट्रीय समारोह में संस्था को एसबीआई फाउंडेशन के सहयोग से कुण्डम विकासखंड में संचालित 'ग्राम सक्षम परियोजना' के अंतर्गत ग्रामीण विकास, आजीविका संवर्धन और कौशल विकास में उत्कृष्ट कार्यों के लिए प्रदान किया गया। समारोह में एसबीआई फाउंडेशन की ओर से सिद्ध लिंगेस तथा संस्था की ओर से अध्यक्ष रेखा कुशवाहा, सचिव नरेंद्र कुमार शर्मा और विनीत यति ने पुरस्कार ग्रहण किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केंद्रीय पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने अपने संबोधन में प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत' के संकल्प को साकार करने में ग्रामीण भारत की अहम भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि ग्रामीण कौशल विकास, आत्मनिर्भरता और सामुदायिक सहभागिता देश के समग्र विकास की आधारशिला हैं तथा अंतिम व्यक्ति तक विकास का लाभ पहुंचाना सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने देशभर की सम्मानित संस्थाओं को बधाई देते हुए कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में समर्पित भाव से कार्य करने वाले संगठन ही वास्तविक परिवर्तन के वाहक हैं। उन्होंने लोक कल्याण भूमिका समिति सहित सभी सम्मानित संस्थाओं के कार्यों की सराहना की।

यह राष्ट्रीय सम्मान संस्था के वर्षों के समर्पित प्रयासों की पहचान होने के साथ ही मध्यप्रदेश और विशेष रूप से जबलपुर जिले के लिए गौरव का विषय है। संस्था ने ग्राम सक्षम परियोजना के माध्यम से ग्रामीण समुदायों के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण, कौशल विकास और आत्मनिर्भरता की दिशा में प्रभावी कार्य किए हैं, जिन्हें राष्ट्रीय स्तर पर सराहना मिली है।

संस्था के पदाधिकारियों ने इस उपलब्धि को टीम के सभी सदस्यों, सहयोगी संस्थाओं, एसबीआई फाउंडेशन और ग्राम स्तर पर जुड़े समुदायों को समर्पित करते हुए कहा कि यह सम्मान भविष्य में भी ग्रामीण विकास और सामाजिक परिवर्तन के लिए और अधिक समर्पण के साथ कार्य करने की प्रेरणा देगा।

नवजात बछड़े व बछड़ियों की मृत्युदर कम करने के उपाय

● डॉ. अशोक सिंह
पूर्व प्राध्यापक एवं प्रभारी
पशु अनुवांशिकी एवं अभिजनन विभाग
पशु चिकित्सा एवं पशुपालन
महाविद्यालय महू (म.प्र.)

पशुपालन हमारी अर्थव्यवस्था और कृषि का अभिन्न अंग है। पशुपालन का कृषि क्षेत्र में 26.90 प्रतिशत (2007-08) व सकल घरेलू उत्पादन में 5.5 प्रतिशत योगदान है। 2007 की पशु गणना के अनुसार हमारे देश में 199.08 मिलियन भैंस है। ग्रामीण क्षेत्र में पशुपालन कृषि के साथ-साथ मुख्य व्यवसाय है।

हमारे देश में नवजात बछड़े एवं बछड़ियों की मृत्युदर 30-35 प्रतिशत है, जिससे पशुपालक भाईयों को बहुत आर्थिक नुकसान होता है। पशुपालकों को एक बछड़े से 6-9 हजार रूपये का फायदा होता है एवं एक गाय और भैंस की बछड़ी 2-3 साल बाद कम से कम 40,000-50,000 रूपये का आर्थिक फायदा करती है। भारत में बछड़े एवं बछड़ियों की मृत्युदर के प्रमुख कारण

शुष्ककाल में सही तरीके से ग्याभिन जानवरों का रखरखाव - शुष्ककाल के दौरान ग्याभिन गाय एवं भैंस को पर्याप्त मात्रा में दाना खिलाना चाहिए क्योंकि बच्चे की सबसे अधिक वृद्धि आखिरी तीन माह में होती है। इस दौरान बच्चे एवं मां दोनों के लिए पोषक तत्व बहुत जरूरी होते हैं, इसलिए गाय एवं भैंसों को इस दौरान कम से कम 2 किग्रा. दाना प्रतिदिन देना चाहिए। गाय व भैंस के ब्याने से 1 माह पूर्व कृमिनाशक दवा अंत:जीवियों से बचने हेतु पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार पिलानी चाहिए। ब्याने के 15-30 दिन पूर्व ग्याभिन को अलग रखना चाहिए।

ग्याभिन जानवर का प्रसव के समय रखरखाव

मुख्यत: ग्याभिन जानवर रात के समय ब्याते हैं। कभी-कभी नवजात बच्चे को आवारा कुत्ते ले जाते हैं। सर्दी एवं वर्षा के समय ग्याभिन जानवर के पास का फर्श सूखा होना चाहिए क्योंकि इस समय नवजात बच्चे को गीला फर्श होने की वजह से ठंड लग जाती है एवं श्वसन बीमारी हो जाती है, जिससे बच्चे की मृत्यु हो सकती है। ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों की मृत्यु सबसे अधिक श्‍वसन बीमारी के कारण होती है। बच्चे के जन्म के तुरंत बाद बच्चे को मां से अलग करके सर्वप्रथम उल्टा करना चाहिए जिससे उसके नाक से म्यूकस निकल सके एवं पर्याप्त श्‍वसन क्रिया चल सकें। बाद में उसके शरीर को तौलिये या किसी अन्य साफ कपड़े से अच्छी तरह पोंछ कर गर्म पानी से जिसमेंनीम की पत्ती या एन्टीसेप्टिक सॉल्यूशन (डिटॉल) मिला हो बछड़े को नहलाना चाहिए। नहलाने के बाद सूखे कपड़े से पोंछना चाहिए। इसके पश्चात् नाभि को 2-3 सेमी शरीर से दूर धागे से बांधकर, नाभि को साफ व जीवाणुरहित कैंची या ब्लेड से काट देना चाहिए एवं तुरंत उस जगह टिंचर आयोडीन सॉल्यूशन या डिटॉल लगाना चाहिए।

- **नवजात बच्चों का जन्म के बाद रखरखाव :** नवजात बच्चों को जन्म के बाद खीस एवं दूध पिलाना - गांवों में हमारे किसान भाई ज्यादातर नवजात के जन्म पश्चात् जैर डाल देने के बाद नवजात को खीस पिलाते हैं एवं कभी-कभी पशु जैर देरी से डालते हैं, जिससे खीस पिलाने में देरी हो जाती है। बच्चों को खीस, जन्म के बाद आधे घंटे के अंदर पिलाना चाहिए क्योंकि प्रथम खीस में बीमारी के विरूद्ध लड़ने की क्षमता भी अधिक होती है जो बाद में धीरे-धीरे घटती जाती है। बच्चों में जन्म के बाद प्रतिरोधक क्षमता उसमें उपस्थित एन्टीबॉडीज से प्राप्त होती है।

बच्चों को पहले दिन जन्म के तुरंत बाद 8-12 घंटे के अंतराल में खीस पिलाना चाहिए। उसके बाद अगले 4 दिन तक शरीर के वजन का 10वां भाग खीस पिलाना चाहिए। बची खीस उसे उन बच्चों को पिलाना चाहिए जिनकी मां खीस न देती हो या जिनकी मां मर जाती है। खीस पिलाने से बच्चों का पहला गोबर निकलने में आसानी होती है और बछड़े की आंत साफ हो जाती है एवं जहरीले पदार्थ कम उत्पन्न होते हैं। खीस में प्रोटीन, विटामिन ए, डी, ई एवं कैल्शियम, मैग्नीशियम, आयरन, फॉस्फोरस आदि अधिक मात्रा में उपस्थित होते हैं जो उसकी वृद्धि के लिए अति आवश्यक होते हैं। बछड़े को दो माह तक केवल दूध पिलाना चाहिए। इसके बाद बछड़े को थोड़ा-थोड़ा हरा चारा खिलाना शुरू करना चाहिए। तीन माह बाद आवश्यकतानुसार चारा खिलाना चाहिए।

- **कृमिनाशक का उपयोग :** बछड़े/बछड़ियों की मृत्यु का दूसरा सबसे बड़ा कारण अंत: परजीवी जैसे गोलकृमि, फीताकृमि आदि का प्रकोप है। बच्चों को यह गंदे पानी, दूषित चारा व मिट्टी खाने से होता है। जिससे बछड़ा सुस्त, शरीर भार में गिरावट, आंखों में चिपचिता आना एवं दस्त लग जाते हैं, जिससे बछड़े की मृत्यु तक हो जाती है, इसलिये बछड़े/बछड़ियों को 7 दिन की उम्र से प्रत्येक 20 दिन में कृमिनाशक दवा पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार देनी चाहिए।

सर्दियों में बछड़े/बछड़ियों का रखरखाव

ग्रामीण क्षेत्रों में बछड़े/बछड़ियों की मृत्यु मुख्यत: सर्दियों में निमोनिया के कारण होती है। फर्श गीला रहता है जिससे रोगजनक जीवाणुओं की संख्या बढ़ती है एवं श्वसन संबंधित बीमारियां होने की संभावना अधिक हो जाती है। इससे बचने के लिए बछड़े/बछड़ियों को सूखी जगह रखना चाहिए एवं सर्दियों में रोज या एक दिन बाद घास/भूसे की बिछावन को बदल देना चाहिए एवं दिन के समय पर्याप्त धूप मिलनी चाहिए। बछड़े/बछड़ियों को सीधी ठंडी हवा से बचाना चाहिए।

टीकाकरण : बछड़े/बछड़ियों में टीकाकरण बहुत जरूरी है, यह मृत्यु दर कम करने में अहम भूमिका निभाता है। टीकाकरण से बछड़े/बछड़ियों की रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, इसलिए पशु चिकित्सक की सलाह के अनुसार खुरपका, मुंहपका, लंगड़ा बुखार, गलघोंटू, थिलेरियोसिस आदि का समय पर टीकाकरण करवा लेना चाहिए।

सामान्य प्रबंधन : बछड़े/बछड़ियों को थोड़ा-थोड़ा हरा चारा खिलाना शुरू करना चाहिए व कभी भी ज्यादा हरा चारा व चारे में अचानक परिवर्तन नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे बच्चों में अफरा आ जाता है, ज्यादा अफरे से भी बच्चों की मृत्यु हो जाती है। बछड़े/बछड़ियों को बाह्य परजीवियों से बचाना चाहिए, क्योंकि ये परजीवी जैसे जू, चिंचड़े आदि खून चूसते हैं जिससे खून की कमी एवं बालों का झड़ना, खुजली व प्रोटोजोआ जैसे थाईलेरियोसिस आदि बीमारियां हो जाती हैं। इसके लिए बच्चों के शरीर पर कीटनाशक का उपयोग पशु चिकित्सक की सलाह से करना चाहिए। बछड़ों के रहने व पानी पीने के स्थान की दीवारों पर चूने की पुताई करनी चाहिए। बछड़ियां एवं बछड़े भविष्य के दुधारू पशु या बैल होते हैं। अत: उचित देखभाल एवं प्रबंधन से पशुपालकों को होने वाले भारी नुकसान से बचाया जा सकता है, इस प्रकार अधिक से अधिक बछड़े एवं बछड़ियों के उत्पादन से अच्छी नस्ल के गायों व भैंसों की संख्या भी बढ़ायी जा सकती है।

एक पेड़ मां का नाम पर किया पौधरोपण

शाजापुर। कृषि विज्ञान केन्द्र, शाजापुर द्वारा एक पेड़ मां का नाम पर केन्द्र के परिसर में वृहद पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, डॉ. एस.एस. धाकड, ग्राम पतोली के सरपंच दिलीप सिंह, केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. मुकेश सिंह, डॉ. डी के. तिवारी, श्री रत्नेश विश्वकर्मा, हितेन्द्र इंदौरिया, निकिता नंद, गंगाराम राठौर, हाफिज खान के साथ लगभग 25 कृषक एवं कृषक महिलायें उपस्थित थे। इस अवसर पर

वैज्ञानिकों द्वारा बताया गया कि वृक्ष हमारी संस्कृति का हिस्सा हैं इसलिए हर नागरिक को ज्यादा से ज्यादा पौधरोपण वैज्ञानिक तकनीक से करना चाहिए एवं लगे हुए वृक्षों को बचाना चाहिए। पर्यावरण को बचाने के लिए खेत की मेड़ों पर फलदार पेड़ों को लगाना चाहिये। वैज्ञानिकों द्वारा पौधरोपण से संबंधित तकनीकी जानकारी के साथ ही हरियाली बढ़ाने हेतु ज्यादा से ज्यादा फलदार वृक्ष संतरा, अमरूद, जामुन, कटहल, आम के साथ ही परम्परागत पेड़ आम, अमरूद, सुरजना, पीपल, बरगद, गुलर, नीम, बांस, आंवला एवं बिलपत्र आदि लगाने की सलाह दी। इस दौरान पयार्वरण को सुरक्षित रखने के लिए पौधारोपण एवं स्वच्छता का संकल्प लिया गया। इसके पश्चात केन्द्र के परिसर में नवग्रह वाटिका में पौधारोपण किया गया। वैज्ञानिकों द्वारा पर्यावरण को बचाने के लिए संगोष्ठी के माध्यम से वृक्षारोपण करने की उन्नत तकनीक की जानकारी दी गई। साथ ही कृषकों की समस्याओं का मौके पर समाधान किया गया।

रायसेन में पर्याप्त खाद उपलब्ध

रायसेन। जिले में खरीफ फसल की बोनी के लिए पर्याप्त मात्रा में खाद उपलब्ध है। कृषि विभाग के अनुसार जिले में अभी 12,202 मीट्रिक टन यूरिया, 1,281 मीट्रिक टन डीएपी, 3,136 मीट्रिक टन एमओपी, 6,792 मीट्रिक टन एनपीके और 9,017 मीट्रिक टन एसएसपी उपलब्ध है। कृषि विभाग के उप संचालक केपी भगत ने बताया कि खरीफ 2026 के लिए जिले को अब तक 1,06,344 मीट्रिक टन खाद प्राप्त हुई है। इसमें से 73,918 मीट्रिक टन किसानों को वितरित की जा चुकी है। किसानों की जरूरत को देखते हुए लगातार खाद की नई खेप भी आ रही है। कृषि विभाग ने किसानों से कहा है कि वे खाद को लेकर चिंता न करें और अपनी जरूरत के अनुसार सहकारी समिति, डबल लॉक केंद्र या पंजीकृत निजी विक्रेता से खाद खरीदें। बोनी के समय एनपीके और सुपर फास्फेट का उपयोग करने की सलाह दी गई है। इससे फसल को जरूरी पोषक तत्व मिलते हैं और उत्पादन बेहतर होता है।

आहार को अधिकाधिक पौष्टिक कैसे बनायें

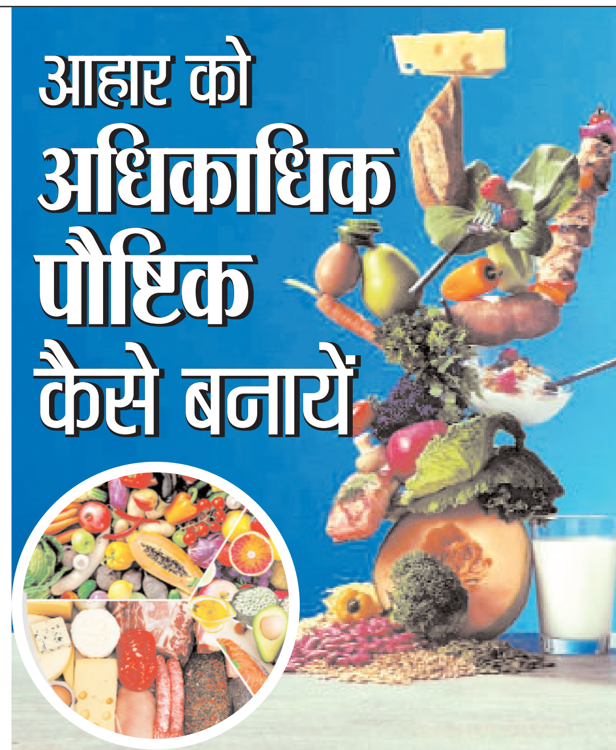

● डॉ. चन्द्रजीत सिंह ● डॉ. किंजल्क सी. सिंह
● मृत्युंजय कुमार मिश्रा ● डॉ. अजय कुमार पांडेय
कृषि विज्ञान केन्द्र, रीवा (म.प्र.)

भोजन और उससे मिलने वाली संतुष्टि का हमारे स्वास्थ्य से सीधा सम्बंध है। हमारे घरों मे भोजन नियमित रुप से और रुचिपूर्वक पकाया जाता है। वैसे तो आहार का प्रमुख कार्य भूख मिटाना तथा पौष्टिक तत्व प्रदान करना है परंतु कई बार स्वाद और भोजन के रंगरूप के चक्कर में उसकी पौष्टिकता से समझौता कर लेते हैं। इसीलिये थोड़ी समझदारी तथा सावधानीपूर्वक भोजन पकाया जाये तो अधिक पोषक तत्व हमारे शरीर को प्राप्त होंगे।

भोजन पकाने में निम्नलिखित सावधानियाँ बरतें

- दालों को पकाने की सावधानी
- उचित मात्रा में पानी लेकर दाल पकायें।
- सभी दालों को पकाने के अच्छी तरह धोयें, उसके बाद साफ पानी में लगभग 1 घंटे के लिये अवश्य भिगोकर रखें। जिस पानी में दाल, छोले, मटर, राजमा इत्यादि भिगोये गये हों, उसे फेंकें नहीं बल्कि उसी पानी में इन्हें पकायें।
- दाल, छोले, मटर, राजमा इत्यादि में खाने वाला सोडा डालकर ना पकायेंग, सोडे से विटामिन बी नष्ट होगा। धीमी आँच पर कुकर में एक या दो सीटियाँ ज्यादा लेने से यह अच्छी तरह नर्म होंगेग।
- दाल को यदि कुकर में पका रहे हैं तो शुरुआत में उबाल आनी के ठीक पहले बनने वाला सफेद झाग हटाकर ही कुकर में ढक्कन लगायें। इससे दाल सुपाच्य बनेगी और पोषक तत्व भी नष्ट नहीं होंगे।
- खाना बनाने और खाने के लिये हल्के एल्युम्युनियम के बर्तनों का उपयोग नहीं करें। ऐसे बर्तनों में पकाया गया भोजन स्वास्थ्य पर बुरा असर डालता है। स्टील के बर्तनों का प्रयोग करना ही उचित है।
- सब्जियों और दालों को खटाई डाल कर पकायें जिससे लौह तत्व, कैल्शियम तथा अन्य जैविक तत्व सुरक्षित रहते हैं।

अनाज को पकाने की सावधानी

- आटे को बिना छाने, चोकर सहित गूँथें और उपयोग करें। चोकर विटामिन बी और रेशे का बहुत अच्छा स्त्रोत है जो पाचन में मदद करता है, कब्ज से बचाता है और धमनियों को मजबूती प्रदान करता है।
- एक बार में सप्ताह भर में खत्म किये जा सकने वाली मात्रा के अनाज का ही आटा पिसवायें। लम्बे समय तक रखे हुये आटे की पौष्टिकता कम होती जाती है और उसमें कीडे इत्यादि लगने का खतरा भी बढ़ता जाता है।
- आटे को बोरियों में ना रखें बल्कि ढक्कन बंद डब्बे, पीपे में ही भंडारित करें।
- अलग-अलग किस्म के अनाजों को मिला कर बिर्रा बनायें, ऐसा करने के लिये आप गेहूँ में मौसम के अनुसार ज्वार, मक्का, बाजरा, जौधागी, चना, सोयाबीन मिलायें।
- सोयाबीन का बिर्रा बनाने के लिये पहले सोयाबीन को रात भर भिगोकर, दानों पर से छिलका उतारें। इन दानों को दोगुने पानी में अच्छी तरह उबालकर धूप में सुखायें। तत्पश्चात नौ भाग गेहूँ में एक भाग सोयाबीन मिला कर पिसवायें और उपयोग करें। जबकि मधुमेह के रोगियों के लिये आठ भाग गेहूँ में दो भाग सोयाबीन मिला कर पिसवायें।
- विभिन्न अनाजों को अंकुरित कर उन्हें भूनकर बच्चों के लिये पौष्टिक बेबी फूड बनायें। यह कम लागत की अच्छी तकनीकी है।

सब्जियों और फलों की सावधानी

- स्थानीय तौर पर उगाई जाने वाली मौसमी सब्जियों और फलों को भोजन में शामिल करें यह ताजी एवं सस्ती भी होंगी और स्वास्थ्य के लिये सर्वाधिक उपयुक्त होगी।
- जो भी फल और सब्जी छिल्के सहित खाई जा सकती हैं उन्हें अच्छी तरह साफ पानी से धो कर (बहते हुये पानी में कम से कम 2 मिनट) छिलके सहित सेवन करें ताकि सम्पर्क कीटनाशकों जैसे कृषि रसायनों और फलों को चमकाने वाले रसायनों तथा अन्य गन्दगी से बचा जा सके।
- फल एवं सब्जियों को छीलने हेतु छिलनी का उपयोग करें और छिलके मोटे न छीलें, मोटे छिलके छीलने से खाद्य सामग्री की मात्रात्मक हानि होती है।
- काटी हुई सब्जियों एवं फलों को तुरंत उपयोग करें वरना इनका पोषक मान घटने लगता है।
- सब्जी को काटने के पहले ही धो लें। कई पोषक तत्व पानी में घुलनशील होते हैं इनकी हानि नहीं होगी।
- सब्जी के टुकड़े बड़े आकार के काटें। इससे सब्जी का कम हिस्सा सीधे तेल, घी, वनस्पती तेल, पानी, आंच और वायु के सम्पर्क में आयेगा और पोषक तत्वों का ह्रास कम से कम होगा।
- छीली और काटी हुई सब्जी को पानी में न डुबायें।
- सब्जियों को लोहे की कढ़ाही में थोड़ी सी खटाई डाल कर पकायें एवं पकने के फौरन बाद सब्जी को स्टील के बर्तन में पलट लें ताकि सब्जी काली न पड़े। लोहे की कढ़ाही में खाना पकाने से खाने में लौह तत्व की मात्रा बढ़ जाती है।

तेल-घी के उपयोग की सावधानी

- घर के सदस्यों की संख्या के आधार पर तेल-घी की मात्रा की खरीद करें।
- बहुत बड़े बर्तन में कम मात्रा में तेल या घी ना रखें।
- एक बार इस्तेमाल किये हुये तेल या घी को बार बार इस्तेमाल ना करें।
- अपने भोजन में संतुलित मात्रा में तेल-घी इस्तेमाल करें। कमी या अधिकता दोनों ही उचित नहीं है।
- अलग-अलग तेलों को बदल बदल कर इस्तेमाल करें।

पके भोजन सम्बंधी सावधानी

- खाद्य सामग्री को पकाते समय और पकाने के बाद भी ढक कर सुरक्षित स्थान रखें।
- पके भोजन को बहुत अधिक ना भूनें और ना ही गहरा तलें।
- भोजन को धीमी आंच में उचित समय हेतु पकायें।
- एक बार पके खाने को बार बार गर्म नहीं करें ऐसा करने से भोजन के पौष्टिक तत्व नष्ट होंगे।
- खाना पकाते समय नमक का प्रयोग नहीं करें बल्कि खाना पक जाने के बाद नमक मिलायें। इससे नमक से मिलने वाला आयोडीन नष्ट नहीं होगा (आयोडीन 80 डिग्री सेंटिग्रेड पर नष्ट हो जाता है)।
- सलाद पर नमक नहीं डालें। ऐसा करने से सलाद में से पानी निकलेगा जिससे पानी में घुलनशील पौष्टिक तत्वों की हानि होगी।
- भोजन की थाली में अधिक से अधिक प्राकृतिक रंगों की खाद्य सामग्री शामिल करें। जितने अधिक रंग की खाद्य सामग्री भोजन में शामिल करेंगे खाना उतना अधिक पौष्टिक होगा।

जल संबंधी सावधानी

- हमेशा स्वच्छ जल का ही उपयोग करें।
- जल को हमेशा साफ बर्तनों में ढककर रखें।
- बरसात के मौसम में मिट्टी के घड़ों का प्रयोग ना करें।
- पेयजल को प्लास्टिक के बर्तनों में भरकर धूप में ना रखें।
- घर के बाहर जाने पर प्लास्टिक की बोतलों के स्थान पर धातु की बनी बोतलों में पानी लेकर जायें।
- बीमार व्यक्ति के लिये साफ पानी को अच्छी तरह उबालकर और ठंडा कर के ही दें।
- पीने का पानी निकालने के लिये हमेशा डंडे वाले गिलास या नल का उपयोग करें।

इन सभी उपायों को अपनाकर सभी पाठक अपने भोजन को पौष्टिक और जीवन को खुशहाल बना सकते हैं। अपने भोजन को जीवन की औषधि समझें ताकि आपको वैद्य के पास जाने की आवश्यकता ना पडे।

फसल बीमा जागरूकता रथ रवाना

मुरैना। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना खरीफ-2026 की जानकारी किसानों तक पहुंचाने के लिए कृषि विभाग ने जागरूकता रथ रवाना किया। यह रथ जिले के अलग-अलग गांवों में पहुंचकर किसानों को फसल बीमा योजना की जानकारी देगा।

जागरूकता रथ को किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग के उप संचालक अनंत बिहारी सड़ैया और वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी राकेश गुर्जर के मार्गदर्शन में रवाना किया गया। रथ के माध्यम से किसानों को बताया जाएगा कि फसल बीमा कौन करा सकता है, आवेदन कैसे करना है, अंतिम तारीख क्या है और इसके लिए कौन-कौन से दस्तावेज जरूरी हैं। किसानों को यह भी समझाया जाएगा कि सूखा, बाढ़, ओलावृष्टि, अतिवृष्टि जैसी प्राकृतिक आपदाओं से फसल खराब होने पर बीमा योजना आर्थिक मदद दिलाने में उपयोगी है। कृषि विभाग ने किसानों से अपील की है कि वे निर्धारित समय के भीतर अपनी फसल का बीमा जरूर कराएं, ताकि प्राकृतिक आपदा से फसल को नुकसान होने पर आर्थिक सुरक्षा मिल सके। इस दौरान उप संचालक कृषि कार्यालय का स्टाफ और एग्रीकल्चर इंश्योरेंस कंपनी के प्रतिनिधि मौजूद रहे।

मूंग खरीदी केंद्रों का निरीक्षण

सीहोर। कलेक्टर श्री बालागुरू के. के. के निर्देश पर जिले के मूंग खरीदी केंद्रों की लगातार जांच की जा रही है। एसडीएम, तहसीलदार और संबंधित अधिकारी केंद्रों पर पहुंचकर खरीदी की व्यवस्था देख रहे हैं। अधिकारियों ने मूंग की गुणवत्ता जांच, तौल, किसानों की सुविधा और केंद्र पर उपलब्ध व्यवस्थाओं का जायजा लिया। अधिकारियों ने केंद्र प्रभारियों को निर्देश दिए कि किसानों से मूंग की खरीदी तय नियमों के अनुसार और पूरी पारदर्शिता के साथ की जाए। किसानों के नाम पर व्यापारी मूंग न बेच सकें, इसके लिए निगरानी बढ़ाने को कहा गया है। मानक के अनुसार नहीं होने वाली (नॉन एफएक्यू) मूंग की तुलाई नहीं करने के निर्देश भी दिए गए। जांच के दौरान केंद्रों पर मूंग का भंडारण, बारदाने, क्यूआर कोड, तौल कांटे और अन्य जरूरी सामान की उपलब्धता भी देखी गई। जिन किसानों के खरीदी स्लॉट की तारीख खत्म होने वाली है, उनकी मूंग की खरीदी प्राथमिकता से करने के निर्देश दिए गए। किसानों से कहा गया है कि वे अपनी तय तारीख और समय के स्लॉट के अनुसार ही खरीदी केंद्र पर मूंग लेकर पहुंचें। केंद्रों पर पीने का पानी, बैठने की जगह और अन्य जरूरी सुविधाएं उपलब्ध रखने के निर्देश दिए गए हैं।

मप्र की जिलेवार एवं फसलवार बोनी

जिला	बोनी 2026	सामान्य क्षेत्र	लक्ष्य 2026	जिला	बोनी 2026	सामान्य क्षेत्र	लक्ष्य 2026	जिला	बोनी 2026	सामान्य क्षेत्र	लक्ष्य 2026
जबलपुर	218.6	238.3	255.6	मैहर	79.2	92.7	107.7	उज्जैन सं	2224.3	2217.0	2236.5
कटनी	144.2	193.5	236.4	रीवा सं	830.9	1100.4	1021.3	मुरैना	234.1	227.9	238.4
बालाघाट	165.5	305.7	309.8	शहडोल	146.3	201.7	219.3	श्योपुरकला	88.9	162.5	168.7
छिंदवाड़ा	402.0	475.5	420.0	उमरिया	79.3	109.9	116.9	भिंड	95.8	115.8	162.5
पांढुर्ना	80.1	76.5	83.0	अनूपपुर	148.7	158.3	190.8	मुरैना सं	375.5	506.2	569.6
सिवनी	345.9	402.6	416.9	शहडोल सं	503.0	469.9	527.0	ग्वालियर	90.9	162.2	194.5
मंडला	172.7	233.8	238.8	इंदौर	246.0	240.6	248.4	शिवपुरी	373.6	428.8	420.5
डिंडोरी	196.6	192.7	238.5	धार	501.6	490.2	506.4	गुना	335.3	331.3	336.3
नरसिंहपुर	260.8	225.9	256.5	झाबुआ	183.6	171.6	184.4	अशोकनगर	258.6	302.5	293.5
जबलपुर सं	2273.0	2344.5	2455.5	अलीराजपुर	186.2	162.3	183.0	दतिया	153.2	183.4	190.9
सागर	523.6	525.9	530.3	खरगोन	390.0	360.3	392.4	ग्वालियर सं	1211.6	1408.2	1435.7
दमोह	308.2	307.2	310.1	बड़वानी	242.0	215.0	234.2	भोपाल	147.4	139.2	151.7
पन्ना	172.8	225.2	214.3	खंडवा	317.8	303.7	310.5	सीहोर	400.9	395.6	408.4
टीकमगढ़	226.0	217.7	230.8	बुरहानपुर	81.9	60.6	66.5	रायसेन	337.8	362.7	393.6
निवाड़ी	77.1	70.9	75.0	इंदौर सं	2071.3	2004.3	2125.7	विदिशा	541.6	509.4	526.6
छतरपुर	346.2	402.7	380.0	उज्जैन	515.0	508.10	515.9	राजगढ़	483.7	470.9	483.8
सागर सं	1436.0	1749.6	1740.6	मंदसौर	317.7	338.00	319.5	भोपाल सं	1911.4	1877.8	1964.1
रीवा	211.0	317.0	253.0	नीमच	175.7	164.20	175.7	नर्मदापुरम	284.7	296.4	319.5
मऊगंज	93.6	87.9	111.8	रतलाम	337.4	334.00	337.5	हरदा	186.5	187.4	193.0
सीधी	114.2	150.5	159.4	देवास	405.4	410.10	410.4	बैतूल	456.6	436.1	456.1
सिंगरौली	115.8	148.0	157.3	शाजापुर	287.1	284.70	288.4	नर्मदापुरम सं	927.8	919.9	968.58
सतना	186.7	304.3	232.2	आगर	187.6	177.90	189.1	मप्र योग	13659.5	14597.8	15044.59

(क्षेत्र-हजार हेक्टेयर में)

कृषि महाविद्यालय में वृक्षारोपण एवं सोलर लाइट ट्रैप की स्थापना

रीवा। कृषि महाविद्यालय, रीवा में एक पेड़ माँ के नाम कृषि महाविद्यालय रीवा स्टाफ एवं रीवा के सम्मानित अतिथियों द्वारा द्वारा अतिथि गृह क्षेत्र में अधिष्ठाता डॉ. एस.के. त्रिपाठी के निर्देशन में वृक्षारोपण किया गया। वृक्षारोपण के उपरांत स्थापित सोलर लाइट ट्रैप का उद्घाटन अधिष्ठाता महोदय द्वारा किया गया। इस अवसर पर जुगल किशोर कनोडीया उद्योगपति रीवा, डिब्रायू फार्मास्युटीकल रीवा से डॉ. मुनीनिद्र द्विवेदी, नरेंद्र कुमार द्विवेदी द्विवेदी ने भाग लिया। कृषि महाविद्यालय रीवा के विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष डॉ. एस.एम. कुरुमबंशी, डॉ. वी.के. सिंह, डॉ. अखिलेश कुमार, डॉ. राधा सिंह, डॉ. प्रदीप मिश्रा, डॉ. ए.के. गिरी, डॉ. शिवानी तिवारी, डॉ. आदित्य श्रीवास्तव, छत्रसाल पांडेय, डॉ. सिद्धिमुनि, जे.पी. तिवारी एवं डॉ. जगदीश प्रसाद तिवारी की भूमिका उल्लेखनीय रही।

जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को दिया प्रशिक्षण

धार। कृषि विज्ञान केंद्र, धार में आगा खान ग्राम समर्थन कार्यक्रम, धरमपुरी संकुल द्वारा परंपरागत कृषि विकास योजना के अंतर्गत एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में धरमपुरी विकासखंड के विभिन्न गांवों से आए 52 किसानों ने सहभागिता की। कार्यक्रम में किसानों को जैविक खेती, मृदा स्वास्थ्य, जैविक आदानों के उपयोग, समूह आधारित खेती तथा जैविक उत्पादों के विपणन से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी दी गई।

कृषि विज्ञान केंद्र, धार के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एस.एस. चौहान ने रसायन-मुक्त जैविक खेती के महत्व पर प्रकाश डालते हुए किसानों को जैविक खाद, जीवामृत, वर्मीकंपोस्ट तथा जैविक कीट एवं रोग नियंत्रण विधियों को अपनाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि जैविक खेती से मृदा की उर्वरता बनाए रखने के साथ कृषि लागत को भी कम किया जा सकता है। किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग, धार के उप संचालक विजय चौरसिया ने परंपरागत कृषि विकास योजना के विभिन्न घटकों, क्लस्टर आधारित जैविक खेती तथा योजना के अंतर्गत मिलने वाले वित्तीय अनुदान एवं लाभों की जानकारी दी।

डॉ. डी.एस. मण्डलोई ने जैविक फसलों के सामयिक प्रबंधन और मृदा स्वास्थ्य सुधार के व्यावहारिक उपाय बताए। वहीं आगा खान ग्राम समर्थन कार्यक्रम के संकुल प्रबंधक हेमंत खेरनार ने किसानों को समूह में खेती करने के लाभ, जैविक समूहों के गठन, एफपीओ की स्थापना, जैविक उत्पादों के प्रमाणीकरण तथा बाजार से सीधे जुड़ने के तरीकों की जानकारी दी। उन्होंने मूल्य संवर्धन की आधुनिक तकनीकों को अपनाने पर भी जोर दिया।

कार्यक्रम मेडी.एस. मौर्य, रितेश जैन, भूपेंद्र कुमार कुर्मी, कन्हैया गावंडे, मागनती लाल चौहान, श्रगणेश निगवाल, जितेंद्र नायक, जीवन निगवाल एवं विशेष नलवाया उपस्थित रहे। प्रशिक्षण के दौरान किसानों ने जैविक खेती से जुड़े विभिन्न विषयों पर विशेषज्ञों से चर्चा कर अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया।

आईसीएआर-एनआईबीएसएम ने बेल्टुकरी के किसानों को वितरित किए 100 स्टोरेज बिन

वैज्ञानिक भंडारण से फसल उपरांत नुकसान कम करने पर दिया जोर

रायपुर। आईसीएआर-राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान, रायपुर द्वारा अनुसूचित जाति उपयोजना के अंतर्गत ग्राम बेल्टुकरी के अनुसूचित जाति वर्ग के किसानों एवं किसान महिलाओं को 100 स्टोरेज बिन वितरित किए गए। इस पहल का उद्देश्य कृषि उपज के सुरक्षित एवं वैज्ञानिक भंडारण को बढ़ावा देना तथा भंडारण के दौरान होने वाले फसल उपरांत नुकसान को कम करना है।

कार्यक्रम में किसानों को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. पी.के. राय ने कहा कि कृषि उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ उत्पादित उपज का उचित एवं वैज्ञानिक भंडारण भी बेहद महत्वपूर्ण है। वैज्ञानिक भंडारण पद्धतियों को अपनाने से उपज को नमी, कीट प्रकोप एवं अन्य नुकसान से सुरक्षित रखा जा सकता है। इससे कृषि उत्पादों की गुणवत्ता और मात्रा को लंबे समय तक बनाए रखने में मदद मिलती है तथा किसानों को बेहतर आर्थिक लाभ प्राप्त होता है। एससीएसपी के माध्यम से किसानों को कृषि उपकरण, प्रशिक्षण तथा आधुनिक कृषि तकनीकों की जानकारी उपलब्ध कराकर उनके सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तीकरण की दिशा में कार्य किया जा रहा है।

इस अवसर पर डॉ. पंकज शर्मा, संयुक्त निदेशक एवं एससीएसपी समन्वयक ने किसानों से संवाद करते हुए धान की फसल में रोपाई के बाद अपनाई जाने वाली प्रमुख सस्य क्रियाओं की जानकारी दी। उन्होंने समय पर खरपतवार नियंत्रण, संतुलित पोषक तत्वों के प्रयोग, उचित जल प्रबंधन तथा फसल की नियमित निगरानी पर विशेष जोर दिया। डॉ. शर्मा ने किसानों को धान की फसल में आगामी समय में संभावित प्रमुख कीटों की पहचान एवं उनके प्रभावी प्रबंधन की जानकारी भी दी। लाभार्थी किसानों एवं किसान महिलाओं ने स्टोरेज बिन उपलब्ध कराने तथा वैज्ञानिक कृषि मार्गदर्शन के लिए संस्थान के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि इन भंडारण सुविधाओं से कृषि उपज को सुरक्षित रखने और फसल उपरांत होने वाले नुकसान को कम करने में काफी मदद मिलेगी। कार्यक्रम का समन्वय डॉ. के.सी. शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक, द्वारा किया गया।

उपार्जन केंद्रों पर की जाये बारदाने और तौल कांटे की पर्याप्त व्यवस्था

नर्मदापुरम। कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा ने डोलरिया तहसील के सोमलवाड़ा स्थित सफल एग्रोटेक वेयरहाउस का निरीक्षण कर मूंग उपार्जन व्यवस्थाओं का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर श्री मिश्रा ने उपार्जन कार्य की व्यवस्थाओं का बारीकी से अवलोकन किया और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए।

उपार्जन कार्य विलंब से प्रारंभ होने पर कलेक्टर ने सख्त नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि उपार्जन कार्य समय पर प्रारंभ किया जाए जिससे किसानों द्वारा लाई जा रही उपज को शीघ्र ही तौला जा सके। उन्होंने कहा कि मूंग उपार्जन कार्य प्रतिदिन प्रात: 9:30 बजे से हर हाल में प्रारंभ किया जाए तथा किसी भी परिस्थिति में उपार्जन शुरू होने में विलंब नहीं होना चाहिए। उन्होंने निर्देश दिए कि उपार्जन केंद्र पर किसानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बारदाने की पर्याप्त उपलब्धता हर समय सुनिश्चित की जाए। उन्होंने उपार्जन प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए केंद्र पर कम से कम पांच तौल कांटे संचालित करने तथा किसानों की बढ़ती आवक को देखते हुए श्रमिकों की संख्या में भी वृद्धि करने के निर्देश दिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि उपार्जन केंद्र पर सभी व्यवस्थाएं सुव्यवस्थित रहें, जिससे किसानों को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े और उनकी उपज का समयबद्ध एवं पारदर्शी तरीके से उपार्जन सुनिश्चित हो सके। कलेक्टर ने कहा कि बारदाने, तौल कांटे एवं श्रमिकों की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी संबंधित सहकारी समिति की होगी। निरीक्षण के दौरान एसडीएम देवेंद्र प्रताप सिंह सहित संबंधित विभागों के अधिकारी एवं उपार्जन केंद्र से जुड़े कर्मचारी उपस्थित रहे।

कृषि कॉलेज रीवा के विद्यार्थियों ने किया स्वैच्छिक रक्तदान

रीवा। मानवता की सेवा और जरूरतमंदों की मदद के उद्देश्य से कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर, रीवा के विद्यार्थियों ने स्वैच्छिक रक्तदान कर समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी का प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया। महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. त्रिपाठी के मार्गदर्शन में एमएससी एग्रोनॉमी अंतिम वर्ष के विद्यार्थी लवेश मालवीय एवं कमलेश आलावा, एमएससी एग्रोनॉमी के विद्यार्थी विजय मदान तथा यूजी विद्यार्थी मनीष कनवाड़िया ने स्वेच्छा से एक-एक यूनिट रक्तदान किया। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने रक्तदान को मानवता की सच्ची सेवा बताते हुए जरूरतमंद मरीजों के जीवन बचाने में इसके महत्व को रेखांकित किया। विद्यार्थियों का यह पुनीत प्रयास न केवल समाज के लिए अनुकरणीय है, बल्कि अन्य युवाओं को भी स्वैच्छिक रक्तदान के लिए प्रेरित करने वाला है।

महाविद्यालय के प्राध्यापकों ने विद्यार्थियों के इस सामाजिक सरोकार की सराहना करते हुए कहा कि रक्तदान से किसी जरूरतमंद व्यक्ति को जीवनदान मिल सकता है। युवाओं की इस प्रकार की सहभागिता समाज में सेवा और संवेदनशीलता की भावना को मजबूत करती है। महाविद्यालय के डॉ. बी.एम. मौर्य, डॉ. रघुराज किशोर तिवारी, डॉ. आर.पी. जोशी, डॉ. वी.के. सिंह, डॉ. बी.के. तिवारी, डॉ. अखिलेश कुमार, डॉ. मनीषा द्विवेदी एवं डॉ. प्रदीप मिश्रा सहित अन्य प्राध्यापकों, वैज्ञानिकों, कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं ने रक्तदान करने वाले विद्यार्थियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

कलेक्टर ने किसानों से किया संवाद

झाबुआ। कलेक्टर डॉ. योगेश तुकाराम भरसट ने ग्राम पंचायत बनी और सामली का दौरा कर फसल बीमा से वंचित किसानों के खेतों का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने किसानों से सीधे बातचीत कर फसल बीमा से जुड़ी उनकी समस्याएं और शिकायतें सुनीं। किसानों ने कलेक्टर को बताया कि किन कारणों से वे फसल बीमा का लाभ नहीं ले पा रहे हैं। कलेक्टर ने किसानों की बात ध्यान से सुनी और उन्हें भरोसा दिलाया कि उनकी समस्याओं के समाधान के लिए शासन स्तर पर जरूरी प्रयास किए जाएंगे।

वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

- ★ 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
- ★ अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/ मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
- ★ इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स,
रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास
होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824
मो. : 9827352535, 9425013875, 9300754675, 9826686078

भैंरुदा में...

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

श्री अर्जुन सिंह
मे. शिवशक्ति इरीगेशन
शनि मंदिर के सामने,
मेन रोड, भैंरुदा, जिला-सीहोर
(म.प्र.) मो. 9926989959

मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स
(कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)

●औषधीय●वन ●सब्जी●फूल●बीज●स्प्रे पंप एवं पार्ट्स ●कीटनाशक ●जैविक खाद ● गार्डन टूल ●जैविक उत्पाद ●ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध।

वितरक - ●निर्मल सीड्स, जलगांव ●कलश सीड्स, जालाना ●अंकुर सीड्स, नागपुर ● वेस्टर्न सीड्स, गुजरात ●दिनाकर सीड्स, गुजरात ●सटिंड सीड्स, दिल्ली ● फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना ●स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई ●जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर ●स्काई बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर ●अनु प्रोडक्ट्स लि. ●श्री सिद्धि एग्रो केम

112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

तिलहन कृषक प्रशिक्षण का आयोजन

शाजापुर। राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन-तिलहन के अंतर्गत कृषि विज्ञान केंद्र, शाजापुर द्वारा कृषि विभाग के सहयोग से अनुसूचित जाति के कृषकों के लिए ग्राम नारायणगढ़, विकासखंड शाजापुर में दो दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में 75 से अधिक प्रगतिशील किसानों ने सहभागिता की।

कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एस.एस. धाकड़, डॉ. मुकेश सिंह एवं डॉ. डी.के. तिवारी ने किसानों को तिलहनी फसलों की उन्नत उत्पादन तकनीकों की जानकारी दी। डॉ. एस.एस. धाकड़ ने किसानों को उन्नत किस्मों के चयन, समन्वित पोषण प्रबंधन, भूमि एवं जल संरक्षण, यांत्रिक खरपतवार प्रबंधन तथा समुचित पौध संरक्षण उपाय अपनाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर किसान फसल की उत्पादकता और आय में वृद्धि कर सकते हैं। उन्होंने उन्नत कृषि यंत्रों की उपयोगिता तथा विशेष रूप से फसल अवशेष प्रबंधन की जानकारी भी दी।

प्रशिक्षण प्रभारी डॉ. मुकेश सिंह ने किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड के आधार पर फसल की आवश्यकता के अनुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करने की सलाह दी। उन्होंने खरीफ फसलों में समन्वित कीट प्रबंधन, तिलहनी फसलों के उत्पादन को बढ़ावा देने तथा मधुमक्खी पालन को आय के अतिरिक्त स्रोत के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित किया। डॉ. डी.के. तिवारी ने किसानों को रासायनिक दवाओं के अंधाधुंध प्रयोग से होने वाले आर्थिक नुकसान और फसलों पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों से अवगत कराया। उन्होंने प्राकृतिक एवं जैविक खेती की उपयोगिता और अपनाने की विधियों की विस्तार से जानकारी दी। वैज्ञानिकों ने किसानों को सोयाबीन में पीला मोजेक एवं सोयाबीन मोजेक रोग की रोकथाम के लिए प्रारंभिक अवस्था में रोगग्रस्त पौधों को खेत से निकालने तथा सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए अनुशंसित कीटनाशकों एवं पीले स्टिकी ट्रैप के उपयोग की सलाह दी। वहीं एन्थ्राक्रोज रोग के प्रारंभिक लक्षण दिखाई देने पर अनुशंसित फफूंदनाशकों के प्रयोग की जानकारी दी गई।

प्राकृतिक खेती पर रोजगारपरक प्रशिक्षण का आयोजन

रतलाम। कृषि विज्ञान केन्द्र जावरा जिला रतलाम द्वारा 5 दिवसीय ग्रामीण बेरोजगार युवक-युवतियों हेतु रोजगारपरक प्रशिक्षण का आयोजन डॉ. सर्वेश त्रिपाठी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख के मार्गदर्शन में किया गया जिसमें जावरा एवं पिपलौदा विकासखण्ड की कृषि सखियों समेत कुल 26 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण के नोडल डॉ. सी.आर. कांटवा, विषय वस्तु विशेषज्ञ द्वारा प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। जिसमें डॉ. कांटवा द्वारा बताया गया कि ग्रामीण युवक-युवतियों को प्राकृतिक खेती के प्रमुख घटकों के बारे में बताया जैसे कि बीजामृत, जीवामृत, घनजीवामृत, नीमास्त्र, ब्रम्हास्त्र और आच्छादित आदि के बारें मे विस्तृत जानकारी प्रदान की। साथ ही वर्तमान समय में सोयाबीन, मक्का एवं कपास आदि फसलों पर जीवामृत, नीमास्त्र, ब्रम्हास्त्र को बनाकर उपयोग करने का तरीका बताया।

प्राकृतिक खेती जागरूकता अभियान एवं कृषक प्रशिक्षण आयोजित

शहडोल। कृषि विज्ञान केंद्र, शहडोल द्वारा ग्राम लमरो एवं मगवां में प्राकृतिक खेती जागरूकता अभियान एवं कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में किसानों को प्राकृतिक खेती, जैविक कीट प्रबंधन तथा रासायनिक कीटनाशकों के सुरक्षित विकल्पों की जानकारी दी गई।

केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. मृगेन्द्र सिंह ने किसानों को बीजामृत, जीवामृत, नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र, अग्नास्त्र तथा दशपर्णी अर्क के निर्माण एवं उपयोग की विधि समझाई। वैज्ञानिक डॉ. ब्रजकिशोर प्रजापति ने बताया कि फसलों में कीट प्रबंधन के लिए स्टिकी ट्रैप और फेरोमोन ट्रैप अत्यंत प्रभावी एवं कम लागत वाले उपाय हैं। इनके उपयोग से कीटों द्वारा होने वाली क्षति में 40 से 50 प्रतिशत तक कमी लाई जा सकती है। साथ ही टमाटर में फलछेदक कीट नियंत्रण हेतु 16 कतार टमाटर के बाद दो कतार गेंदे की फसल लगाने तथा भिंडी में पीली शिरा मोजेक रोग से प्रभावित पौधों को उखाड़कर नष्ट करने की सलाह दी गई। प्रशिक्षण में किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाकर लागत घटाने, मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करने तथा पर्यावरण संरक्षण में योगदान देने का आह्वान किया गया।

सदस्यता फार्म

कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम.-16,ब्लॉक-सी,मानसरोवर कॉम्पलेक्स,हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास,
होशंगाबाद रोड, भोपाल-16 (म.प्र.) फोन 0755 4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्य का नाम...

संस्था का नाम...

पूरा पता...

ग्राम........................पोस्ट........................तहसील........................

जिला........................राज्य........................पिन कोड

दूरभाष/कार्या. .... घर .... मोबा. : ....

सदस्यता राशि का ब्यौरा

■ वार्षिक	: 700/-	■ द्विवार्षिक	: 1300/-
■ त्रिवार्षिक	: 1900/-	■ पंचवर्षीय	: 3100/-
■ दसवर्षीय	: 6100/-	■ आजीवन	: 11000/-

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र ''कृषक दूत'' की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में)........................ (शब्दों में)........................

बैंक का नाम........................ ड्राफ्ट चेक क्रमांक........................

दिनांक........................ संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान........................ प्रतिनिधि का नाम एवं हस्ताक्षर हस्ताक्षर सदस्य एवं संस्था सील

दिनांक........................

व्यावहारिक प्रशिक्षण से कृषि शिक्षा को मिलेगी नई दिशा: श्री चौहान

किसानों से प्रशिक्षण को व्यवहार में उतारकर आय बढ़ाने का किया आह्वान

झांसी। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी में किसानों एवं पशुपालकों के लिए आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन सत्र को वर्चुअल माध्यम से संबोधित किया। इस अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक एवं डेयर सचिव डॉ. एम.एल. जाट, विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. ए.के. सिंह, आईसीएआर के वैज्ञानिक, विश्वविद्यालय परिवार के सदस्य तथा विभिन्न राज्यों से जुड़े किसान एवं पशुपालक उपस्थित रहे।

अपने संबोधन में श्री चौहान ने रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय द्वारा किसानों एवं पशुपालकों को व्यावहारिक प्रशिक्षण उपलब्ध कराने की पहल की सराहना करते हुए कहा कि शिक्षा के साथ-साथ व्यवहारिक ज्ञान और प्रशिक्षण किसानों की उन्नति के लिए अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने विश्वविद्यालय परिवार को इस पहल के लिए बधाई देते हुए कहा कि प्रत्येक कृषि विश्वविद्यालय और संस्थान को अपने-अपने क्षेत्र में इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित करने चाहिए।

श्री चौहान ने कहा कि सरकार का उद्देश्य किसानों को बेहतर प्रशिक्षण उपलब्ध कराकर उन्हें पशुपालन के क्षेत्र में अधिक सक्षम बनाना है, ताकि दुग्ध उत्पादन बढ़े, पशु स्वस्थ रहें और किसानों की आय में वृद्धि हो। इस अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक एवं डेयर सचिव डॉ. एम. एल. जाट ने कहा कि किसानों की आय में तेजी से वृद्धि तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए एकीकृत कृषि प्रणाली को अपनाना समय की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि डेयरी को एकीकृत कृषि प्रणाली का अभिन्न हिस्सा मानते हुए आगे बढ़ाना होगा।

कृषि उत्पादन आयुक्त श्री गुप्ता ने किया डबल लॉक गोदाम का निरीक्षण

नर्मदापुरम। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देशानुसार कृषि उत्पादन आयुक्त के.सी. गुप्ता ने नर्मदापुरम जिले में उर्वरक वितरण व्यवस्था के लिए संचालित ई-विकास पोर्टल की जमीनी स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने विभिन्न कॉमन सर्विस सेंटर एवं मार्कफेड के डबल लॉक गोदामों का निरीक्षण कर पोर्टल के माध्यम से टोकन जनरेशन, उर्वरक आवंटन तथा वितरण प्रक्रिया की विस्तृत समीक्षा की।

निरीक्षण के दौरान श्री गुप्ता ने नर्मदापुरम के कोठी बाजार स्थित सीएससी सेंटर, सेवा सहकारी समिति सांवलखेड़ा, सीएससी डोलरिया तथा बानापुरा कृषि उपज मंडी स्थित मार्कफेड के डबल लॉक गोदाम का भ्रमण किया। उन्होंने किसानों के लिए टोकन पर्ची जारी करने की प्रक्रिया का बारीकी से अवलोकन किया तथा खाद वितरण के दौरान आने वाली तकनीकी एवं व्यावहारिक समस्याओं का मौके पर परीक्षण किया। इस दौरान ई-विकास पोर्टल के तकनीकी विशेषज्ञ भी उपस्थित रहे, जिन्होंने पोर्टल के संचालन से जुड़े विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी।

कृषि उत्पादन आयुक्त श्री गुप्ता ने निरीक्षण के दौरान किसानों से सीधे संवाद कर उनकी समस्याएं एवं सुझाव सुने। उन्होंने किसानों को पोर्टल की कार्यप्रणाली और तकनीकी विशेषताओं से अवगत कराते हुए कहा कि ई-विकास पोर्टल का उद्देश्य उर्वरकों का पारदर्शी, व्यवस्थित वितरण सुनिश्चित करना है। पोर्टल में ऐसी व्यवस्था विकसित की गई है जिससे बिचौलियों एवं उर्वरकों की कालाबाजारी पर प्रभावी अंकुश लगाया जा सके और वास्तविक किसानों को समय पर खाद उपलब्ध हो। उन्होंने बताया कि ई-विकास पोर्टल को और अधिक प्रभावी एवं किसान हितैषी बनाने के उद्देश्य से किसान संगठनों के साथ बैठकें आयोजित की जा रही हैं। साथ ही, फील्ड स्तर पर पोर्टल के संचालन का निरीक्षण कर किसानों को आने वाली व्यावहारिक कठिनाइयों का अध्ययन किया जा रहा है। निरीक्षण के दौरान प्रबंध संचालक मार्कफेड अभिजीत अग्रवाल, महाप्रबंधक अपेक्स बैंक के.टी. साजियान, नर्मदापुरम संभाग के आयुक्त श्रीकांत बनोठ, कलेक्टर सोमेश मिश्रा, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी हिमांशु जैन सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

मप्र में सामान्य से 19 प्रतिशत कम बारिश

प्रदेश के 50 जिले कम वर्षा की चपेट में

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल। वर्षाकाल का ढाई महीना बीत जाने के बाद मध्यप्रदेश में सामान्य से 19 प्रतिशत कम बारिश हुई है। पश्चिमी मध्यप्रदेश में 18 प्रतिशत एवं पूर्वी क्षेत्र में 20 प्रतिशत कम पानी गिरा है। मानसून की अनिश्चिता के बीच खरीफ फसलों की बुवाई 90 प्रतिशत से अधिक हुई है लेकिन कम बारिश से फसलों की स्थिति चिंतनीय है।

मौसम विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार 1 जून से 9 अगस्त 2026 तक पांच जिलों को छोड़कर अन्य जिलों में सामान्य से कम बारिश हुई है। सामान्य बारिश वाले पांच जिले भिंड, बुरहानपुर, देवास, खरगौन एवं मऊगंज है। प्रदेश के 29 जिलों में -20 से -59 प्रतिशत तक कम बारिश हुई है। सामान्य से अधिक वर्षा मात्र दो जिले भिंड एवं बुरहानपुर में हुई है जहां पर क्रमश: 28 एवं 36 प्रतिशत अधिक बारिश हुई।

एक जून से 10 अगस्त तक प्रदेश में 454 मिलीमीटर वर्षा हुई है जबकि इस दौरान सामान्य वर्षा 560 मिलीमीटर होनी चाहिए। पश्चिमी म.प्र. में 462.2 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई है जो कि सामान्य वर्षा 519 मिलीमीटर से 18 प्रतिशत कम है। पूर्वी म.प्र. में सामान्य वर्षा 613.2 मिलीमीटर होनी चाहिए जबकि इस दौरान वास्तविक वर्षा 490.1 मिलीमीटर हुई है। रीवा जिले में सबसे कम -58 प्रतिशत, सिंगरौली जिले में -43 प्रतिशत कम बारिश हुई है। प्रदेश के 29 से अधिक ऐसे जिले हैं जहां पर -20 से -59 प्रतिशत सामान्य से कम बारिश हुई है।

अगस्त एवं सितंबर में भी कम बारिश के आसार

भारतीय मौसम विभाग ने अपने पूर्वानुमान में अगस्त एवं सितंबर महीनों में भी सामान्य से 6 प्रतिशत कम बारिश का अनुमान व्यक्त किया है। मौसम विभाग ने कहा कि अलनीनो के तटस्थ होने से बारिश की गतिविधियों में कमी आने की उम्मीद है।

तेवरी जिला कटनी में...

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

श्री प्रो. पंकज आसाटी

मे. पंकज बीज भंडार

बस स्टैंड के पास मेन रोड़- तेवरी

जिला-कटनी (म.प्र.) मो. 9893428003

मध्यप्रदेश की जिलेवार वर्षा

01 जून से 09 अगस्त 2026 तक (वर्षा मिमी में)

जिला	वास्त.	सामान्य	कम/अधिक%
आगर-मालवा	389.5	542.1	-28
अलीराजपुर	319.9	518.8	-38
अशोकनगर	363	508.4	-29
बड़वानी	369.9	392.5	-6
बैतूल	485.5	621.3	-22
भिंड	453.7	354.2	28
भोपाल	493	569.8	-13
बुरहानपुर	582.5	426.9	36
दतिया	291.4	429.7	-32
देवास	565.2	537.2	5
धार	333.7	484.1	-31
गुना	504.1	565.8	-11
ग्वालियर	423.9	397.6	7
हरदा	492.2	648	-24
इंदौर	451.4	502.2	-10
झाबुआ	409.5	526.3	-22
खंडवा	453.2	470.3	-4
खरगोन	464.3	427.5	9
मन्दसौर	395.9	488.3	-19
मुरैना	230.7	381.3	-39
नर्मदापुरम	422.3	731.9	-42
नीमच	351.7	446.8	-21
रायसेन	518.8	638.7	-19
राजगढ़	429.5	532.4	-19
रतलाम	385.7	537.4	-28
सीहोर	535.2	622.6	-14
शाजापुर	333.8	534.8	-38
श्योपुर	335.7	406.2	-17
शिवपुरी	378.3	481.3	-21

जिला	वास्त.	सामान्य	कम/अधिक%
उज्जैन	414.9	524.1	-21
विदिशा	454.5	607.2	-25
पश्चिमी म.प्र.	426.2	519	-18
अनूपपुर	612.6	600.1	2
बालाघाट	719.1	753.3	-5
छतरपुर	387.9	531.4	-27
छिंदवाड़ा	507.5	616.7	-18
दमोह	485.8	656.9	-26
डिंडोरी	637.1	721.7	-12
जबलपुर	438.5	657.2	-33
कटनी	394.1	558.7	-29
मंडला	539.9	720.6	-25
नरसिंहपुर	506.8	598.9	-15
निवाड़ी	378.3	414.9	-9
पन्ना	430.4	627.1	-31
रीवा	237.9	564.2	-58
सागर	416.1	644.1	-35
सतना	471.6	537.6	-12
सिवनी	582.2	626.4	-7
शहडोल	541.1	566.7	-5
सीधी	342.3	507.3	-33
सिंगरौली	298.9	524.7	-43
टीकमगढ़	312.3	459.7	-32
उमरिया	487.9	481.2	1
मैहर	268.6	464.9	-42
मऊगंज	458.1	456	0
पांढुर्णा	444.1	414.2	7
पूर्वी म.प्र.	490.1	613.2	-20
म.प्र. योग	454	560	-19

(स्रोत : मौसम विभाग)

आर.एन.आई.नं. एमपी एचआईएन/2000/06836 डाक पंजीयन क्र. एम.पी./ भोपाल/625/2024-26 कृषक दूत- एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल-462016 (म.प्र.) Email:- krishak_doot@yahoo.co.in डाक प्रेषण का दिन- मंगलवार

उम्मीद से ज़्यादा का वादा

ACE TRACTORS

50 HP Chetak DI 65 (4WD)

4 सिलिण्डर का 4088 CC दमदार ईंजन

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- 4088 cc का दमदार इंजन
- ड्यूल क्लच
- हैवी ड्यूटी फ्रंट एक्सल (करारो)
- लिफ्ट 2000 kg
- आगे के टायर 9.5x24
- पीछे के टायर 16.9x28
- MRF Tyre

दमदार ट्रैक्टर शानदार परफॉर्मेंस

DI 350 NG | 40 HP

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- लिफ्ट 1200 kg
- 2858 cc का दमदार इंजन
- ऑयल ब्रैक्स (तेल में डूबे)
- सिंगल / ड्यूल क्लच
- आगे के टायर 6x16
- पीछे के टायर 13.6x28
- इंजन रेटिड 1800 rpm

हर कदम हर डगर
ACE TRACTORS
हर किसान का हमसफर

100% Swadeshi

ACE ट्रैक्टर 15-90 HP में उपलब्ध

कस्टमर हेल्प लाइन 1800 1800 004

अग्रणी बैंकों एवं प्राईवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेंस उपलब्ध

रिक्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - संजय कुमार : 9540943883

ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.

Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India
Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com